अमरवाणीप्रकाशकमण्डलग्रन्थमालाया द्वितीयं पुष्पम्

श्रीमत्स्वामिगुरुचरणदासमहाराज-

# चरितामृतस्तोत्रम्

…वयिता
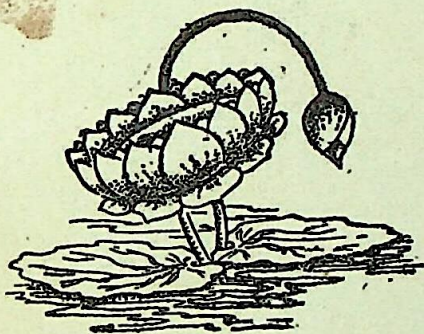
अमरचन्द्रशास्त्री

स्वामिश्रीमद्गुरुचरणदासमहाराज—

# चरितामृतस्तोत्रम्

लेखक :—
विद्यावाचस्पतिः, कविरत्नम्,
अमीरचन्द्र शास्त्री साहित्याचार्यः

अनुवादकः
श्री शरच्चन्द्र कुशलः

प्रकाशकम्
अमरवाणी प्रकाशक मण्डलम्
फेज १, बी-७२, अशोकविहारः
दिल्ली-५२

प्रकाशकम्—
अमरवाणी प्रकाशक मण्डलम्



प्रथमावृत्तिः ११००

मूल्यम्—रूप्यकमेकम्

मुद्रक :—
आनन्दप्रिंटिंग प्रेस,
२/३४, रूपनगर दिल्ली-७

## The Translator Speaks :

Papa is a superb writer. Whatever he writes is excellent. His writings in Sanskrit are matchless and cannot be grasped easily. One word will mean hundred things. His verses are oceans filled in pitchers, as they say in Hindi "Gagar main Sagar".

Here before you, readers ! is being presented a book written about a man indescribable in speech and incogitable to mind. This benevolent ascetic "Swami Gurucharan Dass" is absolute and an absolut can not be defined by the worldly resources available.

I was asked by my papa and this great sage to do the translation of these verses in Hindi and English. I have never been a poet nor a writer. To transalate verses that too Sanskrit verses and these too written by that superb curidite of this language was not an easy task, but I accepted this challenge because I know—

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥

(By the grace of God the dumb speaks, the deaf hears and the cripple crosses over the mountain).

There were words in these verses about which Hindi and English Dictionaries remained silent, proving in reality "How difficult it is to describe a real saint".

But somehow or the other I have completed this job by the grace of that Great Guru Swami Gurcharan Dass. My pen which stopped at least twenty times while writing an application to the principal about sick leave, went on translating the pecan of this pious saint.

It is my first effort, it may be full of mistakes, but I present it to the sacred feet of that mahatma with the words—

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।

Whether it is good or bad ! Pure or impure ! Sacred or Sinful ! I present it to you; O Mahatma! so that it may be glorified by the touch of your sacred feet.

**Guru Purinma**
**Samvat 2030**

**S.C. Kushal**

# अवतरणिका

इस स्वरचित 'चरितामृत स्तोत्र' की अवतरणिका में मुझे पूज्यपाद स्वामी श्री गुरुचरणदास जी महाराज का ही परिचय देना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हुआ। उनका आधिभौतिक परिचय तो स्तोत्र में उनके चरितामृत के उल्लेख से कुछ कुछ दिया गया है जो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है किन्तु एक सन्त का आध्यात्मिक परिचय ही वास्तविक परिचय होता है जो अभी स्तोत्र में नहीं दिया गया। सम्भवतः मेरी अन्तरात्मा को वही परिचय देना आवश्यक लग रहा है।

"स्वामी जी का आध्यात्मिक परिचय तो श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय, द्वादश और चतुर्दश अध्याय में स्वयं उनके परमप्रिय भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से दे रखा है' अकस्मात् यह ध्यान आया। स्वामी जी स्थितप्रज्ञ हैं, भगवद्भक्त हैं और गुणातीत हैं, कर्मयोगी, भक्तियोगी और ज्ञानयोगी हैं।

वे अपने आप में सन्तुष्ट हैं अतः निरन्तर सर्वभूतहिताय और सर्वभूतसुखाय कार्य करते हुए वे स्वगत सभी कामनाओं से अछूते रहते हैं। दुःख में उद्वेग नहीं, सुख में स्पृहा नहीं अतः वे रागद्वेष आदि द्वन्द्वों से मुक्त हैं। शुभ या अशुभ जो भी फल (परिणाम) उपस्थित हों उसमें अनासक्त होने के कारण वे शुभ फल का स्वागत और अशुभ फल का तिरस्कार नहीं करते। अतः स्थितप्रज्ञ हैं।

स्वामी जी किसी से द्वेष नहीं करते, प्राणिमात्र के मित्र हैं, करुणाशील हैं। निर्मम, निरहङ्कार हैं। सुख दुःख में समान हैं और क्षमावान् हैं। सदा सन्तुष्ट हैं, योगी हैं, यतात्मा हैं और दृढ़-निश्चयी हैं। मन और बुद्धि दोनों से भगवत्स्वरूप में मग्न हैं अतः भगवद्भक्त हैं। उनसे कोई उद्विग्न नहीं होता, वे किसी से उद्विग्न नहीं होते, इतना ही नहीं वे हर्ष से, अमर्ष (ईर्ष्या) से, भय से और उद्वेग से मुक्त हैं। किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखते, पवित्र हैं, कुशल हैं, उदासीनभाव से रहते हैं अतः व्यथित नहीं होते। संरम्भपूर्वक किसी कार्य का प्रारम्भ नहीं करते। हर्ष, द्वेष, चिन्ता और आकांक्षा से रहित हैं, शुभ अशुभ दोनों से परे हैं। शत्रु और मित्र में, मान और अपमान में, शीत और उष्ण में, सुख और दुःख में समान हैं क्योंकि आसक्ति रहित हैं। निन्दा और स्तुति में समानभाव से रहते हैं, परनिन्दा में मौन रखते हैं, परस्तुति में सन्तुष्ट होते हैं। उन्होंने सैकड़ों नहीं हजारों स्थान बनवा दिये हैं किन्तु उनका अपना कोई स्थान नहीं अतः अनिकेत हैं। स्थिरबुद्धि या स्थितप्रज्ञ तो वे हैं ही। अतः वे प्रभु के परमप्रिय भक्त हैं।

प्रकाश, प्रवृत्ति और मोह क्रमशः सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण के कार्य हैं, जो स्वभाववश प्राणियों में प्रकट होते हैं। स्वामीजी इनके प्रति न द्वेष करते हैं न राग। वे स्वयं उदासीन-से रहते हैं, तीनों गुण उन्हें विचलित नहीं करते। गुण गुणों में वर्तमान हैं यह विचारकर स्वामी ज़ी अवस्थित रहते हैं, विचलित नहीं होते। सुख-दुःख में, मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण में, प्रिय और अप्रिय में, निन्दा और स्तुति में समानभाव रखने के कारण वे सदा स्वस्थ (आत्मसंस्थ) हैं और धीर हैं। अतः वे गुणातीत हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के—

माञ्च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ।। १४,२६।

के अनुसार वे अनन्य भक्ति योग के द्वारा गुणातीत होकर ब्रह्म-भाव में स्थित हैं, ब्रह्मनिष्ठ हैं।

वे अमानी, अदम्भी, हिंसारहित, क्षमाशील, सरल, गुरुभक्त, पवित्र, स्थिर, संयमी, विरक्त, निरहङ्कार हैं। वे निरन्तर जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि में दुःख और दोषों का विचार करते हैं, अतः अनासक्त हैं। शिष्यप्रशिष्यों, और आश्रम-आवासों में उन्हे ममता नहीं है, अतः इष्ट या अनिष्ट जो कुछ भी हो, सभी अवस्थाओं में वे समान चित्त रहते हैं। प्रभु में अनन्यभाव रखते हैं, एकान्त सेवी हैं, बड़े-बड़े जलसों जलूसों में भी वे तटस्थ रहते हैं। अध्यात्मज्ञान में नित्यमग्न रहना, तत्त्वज्ञान के परमार्थ रूप परमात्मा का साक्षात्कार करना यही उनका नित्य-कर्म है, और इस प्रकार स्वामी जी सदा ज्ञानमयी स्थिति में अवस्थित हैं।

उनका चरित्र मानवमात्र के लिये अनुकरणीय है। सन्तसमाज के लिये आदर्श है और भक्तवृन्द के लिये मननीय और सेवनीय है। इसलिये यह पवित्र चरित्र प्रकाशनीय है प्रचारणीय और प्रसारणीय है। इसके पाठ से प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य में तत्पर रहने की प्रेरणा मिलती है। तभी तो—

'इमां विप्रोऽधीत्य श्रयति सुतरां ब्रह्ममयतां
तथा राजन्योऽपि प्रणयत्ति जगन्नेतृवरताम्।
समृद्धिं वैश्योऽपि व्रजति खलु शूद्रो विनयितां
गतिं तामेवान्ते श्रयति यदि नारी च पठति ।।

इस कथा को पढ़कर ब्राह्मण ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है। क्षत्रिय जगत् में श्रेष्ठ नेता बनता है। वैश्य समृद्धि को प्राप्त करता है और शूद्र विनयवान् हो जाता है। यदि इस कथास्तोत्र को कोई स्त्री पढ़ती है तो वह भी परमगति को प्राप्त होती है।' यह फलश्रुति लिखी गई है।

इस शुभ कार्य में मुझे जिन आत्मीय जनों ने सहयोग दिया है उन्हें धन्यवाद दूं तो कुछ परायापन झलकेगा, अतः मौन हूं। वे मनका भाव जानते ही हैं।

अमीरचन्द्रशास्त्री

अशोक विहार,
दिल्ली-५२।
शिवरात्रि २०३० वि०

त्रिलोक्यां लोकोऽयं दधदतिशयं ख्यातिमगमच्,
श्रिता लोके चास्मिन् भरतवसुधेयं महितताम् ।
अथास्यां पञ्चाम्बुर्भजति महिमानं श्रुतिजनिः,
पुनस्तस्मिन् झङ्गं जयति सरितां सङ्गमपदम् ॥

तीनों लोकों में यह (मर्त्य) लोक विशेषताएँ धारण करने के कारण प्रसिद्धि को प्राप्त है। इस लोक में यह भारत भूमि प्रतिष्ठा को धारण करती है। इस भारतभूमि में भी वेदों की जन्मभूमि पंजाब प्रदेश महिमाशाली है, पंजाब में भी झङ्ग-मण्डल सबसे अधिक उत्कर्ष से विराजमान है, क्योंकि वह चनाब, जेहलम और सतलज तीन नदियों के समागम से पश्चिमोत्तर भाग का प्रयाग या तीर्थराज है, इस त्रिवेणी को यहाँ त्रिमुख (त्रिम्मूँ) कहते हैं।

Among the three Worlds of this Universe the mortal world, the earth is famous for its specialities. On this earth Bharat has its own place of honour. In Bharat, Punjab, the origin of Vedas is most Venerable. In Punjab, Jhang, the prayaga or tirtharaja of northwest India is at the top as it is a place where Chanab, Jhelum and Satlaj meet to form another confluence of three rivers known as Trimmukh or Trimoon.

इहाविर्भूतोऽभूद्यदयमवधूतो यतिवरः,
स्वयं ब्रह्मैवारादवगमयितुं दाससरणिम् ।
कथा यत्सिद्धीनां प्रतिजनपदं वृद्धवदनैः,
समुद्गीता लोकांश्चकितयति निष्ठापयति च ॥

इस झङ्गमण्डल में स्वयं ब्रह्म दासभाव या सेवामार्ग का निर्देश करने के लिए अवधूत यतिश्रेष्ठ के रूप में (बाबा ब्रह्मदास) नाम से प्रकट हुए थे। जिनकी सिद्धियों की चर्चा यहाँ प्रत्येक ग्राम में वृद्धजनों के मुखों से गाई जाती हुई लोगों को चकित भी करती है और निष्ठावान् भी बनाती है।

In this Jhang District Lord Brahma him-self under the name 'Baba Brahma Dass' appeared as the best avadhoot saint of the times so as to tell the people about Das bhava or Seva marg—the purport of service. In every village, even to-day, the old and the learned people tell the tales of his virtues making people wonder and believe in God.

असौ स्थाने स्थाने निजचरणविन्यासविमले,
कुटीं कृत्वा कृत्वातपदिह तपस्तीव्रममलम् ।
समुद्भूता श्रद्धा सपदि जनताया हृदि परा,
तपो यज्ञं दानं प्रति तमवधूतं प्रति तथा ॥

[वे बाबा ब्रह्मदास जी महाराज अपने पदार्पण द्वारा निर्मल किए गए स्थानों पर कुटिया बनाकर वहाँ अति तीव्र अतएव निर्मल तप करते थे। जिससे जनता के हृदय में तप, यज्ञ, दान और उन महात्मा के प्रति परम श्रद्धा उत्पन्न होती थी।]

Baba Brahma Dass went place to place making reclusories, where he did the difficult and sacred deeds of devotion, the tapasya. This cultivated a craving for penance (tap), Oblation (Yajna), Charity (Dan) and an honour for the saint in the hearts of the people.

हरिद्वाराज्ज्वालापुरमुपगते मञ्जुलपथे,
महात्मासौ शान्ते चिरमतपदेकान्तगहने ।
समन्तात्तत्पादार्पणधुतमले जङ्गलपदेऽ-
प्यभूदस्मिन्नानाविधसुखभृते मङ्गलशतम् ॥

हरिद्वार से ज्वालापुर को जाने वाले सुन्दर मार्ग पर उन महात्मा ने शान्त और एकान्त वन में चिरकाल तक तपस्या की। उन के पदार्पण से निर्मल हुए एवं अनेक प्रकार के सुखों से परिपूर्ण उस जङ्गल में भी चारों ओर शतशत मङ्गल होने लगे।

On the excellent way from Haridwar to Jwalapur in the peaceful and lonely woods, the mahatma sat in memory of God for years and years to come. The jungle purified by his foot-prints over flew with comforts and happiness all over.

सरित्कुल्याकूले ललितवनशोभावलयितेऽ-
वधूतस्यावासः प्रथित इह तन्नामककुटी।
निरीकार्यारामः स खलु गतकामैः मुनिशतैः,
समेतैरद्यापि श्रयति सुतपोधामसुषमाम् ॥

यहाँ सुन्दर वन की शोभा से घिरे हुए गङ्गा जी की नहर के किनारे पर उस अवधूत महात्मा का आवास स्थान उन्हीं बाबा ब्रह्मदास के नाम की कुटिया के नाम से प्रसिद्ध है। यह वीतराग निरीकारियों (निर्विकार सन्तों) का आश्रम एकत्रित हुए अनेक महात्माओं द्वारा आज (विकराल कलि-काल में) भी सुन्दर तपोवन की शोभा को प्राप्त है।

The place where he dwelt in these days is known as 'Baba Brahma Das ki kutiya' and still exists at the shore of Ganga-Canal surr-ounded by the beautiful green woods. This wonderful hermitage is glorified, even today, by the presence of many Nirikari saints, who are free from worldly attachments.

इहानेके सन्तो यमनियमवन्तो मधुमतीं,
गता भूमिं शिष्येष्वपि सपदि सङ्क्रान्तिमदधुः ।
मठाधीशो ब्रह्मानुगगुरुकृपाभाजनमभूद्,
दयासिन्धुर्बन्धुर्विपदि शिवरामानुचरणः ॥

यहाँ अनेक सन्त यम नियमवान् होकर मधुमती भूमिका को प्राप्त हुए और उन्होंने अपने शिष्यों में भी उस भूमिका को सङ्क्रान्त किया । श्रीमान् बाबा ब्रह्मदास जी महाराज की गुरुकृपा के पात्र श्री शिवरामदास जी महाराज जो दया के सिन्धु थे और दुःख में (दीनों के) बन्धु थे, यहीं मठाधिपति अर्थात् महन्त हुए ।

Many ascetics lived here following Yama and Niyama—the parts of Yoga, reached the exciting stage of Yoga called Madhumati, and transferred it in their disciples too. After Baba Brahma Dass, his favourite pupil Shri Shiv Ram Dass Ji maharaj who was famous for his kindness and sympathy for the poor and down trodden, became the head of this monastery.

भजन्तस्तत्पादौ मम कुलपुमांसः सविनयं,
सपैडारामाद्याः समधिगतवन्तः प्रभुरतिम् ।
तुलम्बातो याता अहमदपुरस्यालनगरं,
श्रिता राजेत्यादि प्रचुरविभवालम्बनपदम् ।।

मेरे कुलपुरुष श्री पैंडाराम, प्याराराम, होतीराम आदि विनयपूर्वक उन महात्माओं की चरणसेवा करते हुए प्रभुभक्ति को प्राप्त हुए थे। वे (मेरे पितामह आदि) 'तुलम्बा' से 'अहमदपुर स्याल' में जा बसे और वहाँ प्रचुर वैभवशाली होने के कारण 'राजा' आदि पदवियों को प्राप्त हुए।

My ancestors Shri Pera Ram, Pyara Ram, Hoti Ram and others came to know about the ways of worshipping God-bhakti through the service of these saints with honour. They (my ancestors) left Tulamba for Ahmadpur Syal and became famous as 'Raja' due to their majesty and fortune.

अमुष्मिन्नध्यक्षे सति वसति लक्ष्मीरिह पुरा,
सरस्वत्युद्दामा प्रविलसति चास्मिन्मुनिपदे।
विशिष्टा विद्वांसः शरणमगमञ्छात्रसहिताः,
ससम्मानं चेहाश्रयमुपगताः सर्वसुविधम् ॥

स्वामी श्री शिवरामदास जी महाराज जब इस आश्रम में अध्यक्ष थे तब यहाँ लक्ष्मी तो निवास करती ही थी, उद्दाम सरस्वती भी इस साधु आश्रम में विलास करती थी। विशिष्ट विद्वान् अपने छात्रगणों के साथ यहाँ शरण पाते थे और सम्मानपूर्वक समस्त सुविधाओं से युक्त आश्रय प्राप्त करते थे।

Saraswati, the goddess of knowledge and Laxmi, the goddess of fortunes, both lived here in peace and displayed their virtues under the supervision of Shri Shiv Ram Dass ji maharaj. The scholars and their students lived in this Ashrama and were given all the facilities with respect and care.

अहं शास्त्रिश्रेण्यास्त्रयमपि समानां समवसं,
तदादेशात्कुर्वन्निह मुनिगणे सात्त्वतकथास् ।
दयारामः स्वामी मम दिशति तत्रोचितमतिं,
मुनिर्गङ्गादासः समवहितवान् सर्वसुविधाः ॥

मैं भी शास्त्री परीक्षा के तीनों वर्ष यहाँ पर रहा, स्वामी श्री शिवरामदास जी महाराज की आज्ञा से आश्रम में भागवत कथा कहता रहा। श्री स्वामी दयारामजी महाराज मुझे कथाश्रवण करने के बाद उचित निर्देश दिया करते थे और श्री स्वामी गंगादासजी महाराज मेरी सभी सुविधाओं का ध्यान रखते थे।

I, too, lived here for three years when I was a student of Shastri. The mahanta asked me to recite the Bhagvata. Swami Daya Ram gave me his valuable comments and suggestions after the preachings and Swami Ganga Dass looked after my facilities.

इहैवाहं साक्षादकरवमिमं प्रांशुवपुषम्,
सुगौरं सर्वाङ्गे सुभगमथ विद्याव्यसनिनम्।
प्रसन्नं प्रोदारं महितशिवरामानुगगुरो—
र्गिरायत्तायासं गुरुचरणदासं युवयतिम् ॥

यहाँ रहते हुए ही मैंने प्रांशु शरीर वाले, गोरे रंगवाले, सर्वाङ्ग सुन्दर, विद्याव्यसनी, सदाप्रसन्न, परम उदार, अपने गुरु श्री शिवराम दासजी महाराज की आज्ञा से आश्रम की व्यवस्था का भार संभाले हुए युवक संन्यासी स्वामी श्री गुरुचरणदासजी महाराज को पहिली बार देखा।

During my stay here, I chanced to see a fair skinned, tall, handsome and jolly young saint Swami Gurucharan Dass ji maharaj, who had a craze for education. He supervised the monastery under the guidance of his Guru Shri Swami Shiv Ram Dass Ji Maharaj.

पिता मे गोसेवापरमसुकृतोपार्जनधिया,
दुनीचन्द्रः श्रीमांश्चिरमवसदस्मिन्सविनयम् ।
प्रसूर्मे भक्त्या श्रीयुतहुकुमदेवीति विदिता,
स्वयं पाकैस्तैस्तैः सुकृतपरिपाकं कृतवती ॥

मेरे पूज्यपिता श्री दुनीचन्द्रजी आश्रम की गौओं की सेवा से परम पुण्य का लाभ प्राप्त करने के विचार रखते थे तथा मेरी पूज्य माता श्री हुकुमदेवीजी महात्माओं के लिए रसोई तैयार करने से पुण्य-परिपाक समझती थी अतः कुछ समय दोनों निःस्वार्थ भाव से आश्रम की सेवा करते रहे ।

My reverend father did the meritorious job of looking after the cows in this monastery while my mother took the charge of the pious work of cooking the meals for the ascetics. They too lived here for sometime doing these sacred jobs.

पितृभ्यां संसेव्यानथ च कुलजैः पूर्वपुरुषैः,
सिषेवे मद्बन्धुः सपदि तुलसीदासकुशलः।
अमीषामाशीर्भिः फलितमभवन्नः कुलमिदं,
वपुः पुष्टं, तुष्टं हृदयमथ मृष्टञ्च वचनम् ॥

कुशल कुल के पूर्व पुरुषों और माता-पिता द्वारा भी संसेवनीय इन महात्माओं की मेरे भाई तुलसीराम जी कुशल भी सेवा करते रहे। इन महात्माओ के आशीर्वादों से हमारा कुल सफल हुआ, शरीर पुष्ट हुए, हृदय सन्तुष्ट हुए और वाणी मृष्ट अर्थात् संस्कारवती हुई।

The saints. who were earlier served by the ancestors of the Kashal family and even by my parents, were also served by my elder brother Shri Tulsi Ram Kushal. Due to the benedictions of these sages our family became popular, bodies became muscular, hearts acquired complacence and language became ornamented.

प्रकाशो रामादिर्गुरुवचनतश्चाश्रमपदे,
व्यवस्थां कुर्वाणो मयि समवधानं स्म ददते ।
परं ग्रन्थागारे मम सुविनियोगं कृतवताऽ—
नुकम्पा सा काचिद् गुरुचरणदासेन विहिता ॥

अपने गुरुदेव श्री शिवरामदासजी महाराज के आदेश से स्वामी रामप्रकाशजी महाराज इस आश्रम की व्यवस्था करते हुए मेरा विशेष ध्यान रखते थे। स्वामी गुरुचरणदास जी महाराज ने तो वहाँ के पुस्तकालय में मेरी नियुक्ति करके मुझ पर अनिर्वचनीय कृपा की थी।

As instructed by Shri Shiv Ram Dass Ji maharaj, his pupil Swami Ram Prakash, who looked after the monastery, took care of me especially. Swami Guru Charan Dass did me an indescribable favour by appointing me in the library.

**अयं ग्रन्थागारो रहसि मयका सेवितपदो,**
**रहस्यान्यादिक्षन्मम सकलशास्त्रेषु सहसा।**
**यदाधारेणाहं लघुमतिरपि स्वस्थमनसा,**
**समाजे साधूनामकरवमहो ! सात्त्वतकथाम् ॥**

इस पुस्तकालय की मैंने एकान्त भाव से सेवा की, तब इस पुस्तकालय ने मुझे शीघ्र ही समस्त शास्त्रों के रहस्यों का निर्देश देने का अनुग्रह प्रारम्भ कर दिया। जिसके आधार से मन्दबुद्धि होते हुए भी मैं स्वस्थचित्त से वहाँ के साधुसमाज में बैठकर श्रीमद्भागवत की कथा कह सका (जिसमें विद्वानों की परीक्षा होती है)।

I looked after this library with whole of my concentration and in return the library provided me with the knowledge of the secrets of all Shastras. It was due to my study in this library that I was able to preach Bhagvata inspite of being feeble minded.

हरिद्वारे प्राप्ता भृशमृषिकुले कीर्तिरमला,
प्रतिष्ठा वा लब्धा तदनु मघियानाख्यनगरे।
पुनर्दिल्ल्यां दिल्लीसविधनगरेष्वप्यहमगां,
सुसम्मानं यं यं, तमनु निहिता तस्य सुकृपा ॥

मैंने ऋषिकुल हरिद्वार में जो विद्वत्ता प्रयुक्त निर्मल कीर्ति प्राप्त की, महावीर संस्कृत महाविद्यालय मघ्याना में जो प्रधानाचार्य होने की प्रतिष्ठा पाई, फिर दिल्ली में सनातनधर्म सभा ५२, दरियागंज तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ आदि में एवं दिल्ली के आसपास प्रदेशों में जो सम्मान प्राप्त किया, उस सबके पींछे स्वामी गुरुचरणदास जी महाराज के द्वारा पुस्तकालय में नियुक्त करने आदि की कृपा ही काम करती रही।

In my view the honour I got in Rishikul, Haridwar as a scholar, the Principalship I achieved in Mahavir Sanskrit Vidyalaya Maghyana, The fame I gained in Sanatan Dharam Sabha and Lal Bahadur Shastri Kendriya Sanskrit Institute of Delhi and in the nearby states, are all the out comes of my appointment in this library due to the kind favour of Swami Guru Charan Dass Ji Maharaj.

तदस्याकस्मान्मे परमसुहृदः केन विधिनाऽ-
नृणः स्यां कृत्वा कामुपकृतिमिति प्रश्नरशना ।
चिराच्चेतो बद्ध्वा पुनरपि पुनः कर्षति मतिं,
मतिश्चैषा वाणीं नुदति सखि वन्दस्व तमिति ॥

अब इस अकारण परम सुहृद् (हितचिन्तक) श्री स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज का किस प्रकार प्रत्युपकार करके मैं उऋण होऊँ यह प्रश्नशृङ्खला बहुत दिनों से मेरे चित्त को बाँधकर मेरी बुद्धि को भी बार बार खींचती है और मेरी बुद्धि वाणी को प्रेरित करती है—'हे सखि, तुम स्वामीजी का स्तुतिगान करो ।

Questions like, "How to repay the kindness this most loving Swami Gurucharan Dass," have been troubling me since long and the mind seems to be saying to the toungue. "Well friend, come and recite the paean of this great sage".

अये वाणी काणीभवति यदि सा स्तौति कृपणं,
स्तुवन्ती सा क्रूरं क्वचिदपि कृपाणीभवति च।
परं शान्ते दान्तेऽप्युपरतितितिक्षादिमहिते,
महात्मन्याख्यान्ती लवमपि पियूषीभवति सा ॥

'अहो जो कृपण व्यक्ति की स्तुति करती है वह वाणी काणी हो जाती है—दूषित हो जाती है और वह कृपाण के समान दुःखद हो ज ती है जो क्रूर पुरुष की स्तुति करती है। किन्तु शान्त, दान्त' उपरति,तितिक्षा आदि से पूजित महात्मा के लेशमात्र वर्णन से भी वह अमृतमयी हो जाती है।'

"Eh ! The voice that praises a miser is a corrupted voice and the speech that invocates a cruel person is as troublous as a sword but a language that describes even a shadow of an enduring, mild, impartial and self-possessed saint becomes immortal".

**तटस्थं चेत्सन्तं कवयति कविस्तर्हि सुजनैः,**
**स भूयः श्लाघ्यः स्यात्किमु पुनरिहेट्टक्षसुहृदम् ।**
**इति प्रायः शून्ये मतिकृतनिदेशं श्रुतवती,**
**ममेयं वाचालीभवति किल वाचालिवलिता ।।**

'यदि कवि किसी तटस्थ सन्त का भी वर्णन करता है तो सज्जनों द्वारा वह अत्यन्त श्लाघनीय होता है, फिर ऐसे सुहृत् (हितचिन्तक) सन्त का वर्णन करने वाले का क्या कहना ?' इस प्रकार प्रायः एकान्त में बुद्धि के द्वारा निर्देश को सुनकर मेरी यह वाणी अपनी बुद्धि आदि सखियो से आवेष्टिता होकर वाचाल हो गई है ।

"Even a poet who describes an indifferent saint is respected by respectable people then what to talk of him who narrates the story of a benevolent ascetic," saying these words my brain inspired my wit again and again.

पवित्रीभूतेयं कुलगुरुगुणैकांशकथनात्,
पियूषीभूता तच्चरणरजसां स्तोत्रकरणात्।
इदानीं पूर्णांशं गुरुचरणदासं भजति चे—
न्न जाने कं भावं कलयति पियूषादपि परम् ॥

मेरे कुलपुरुषों के गुरुजनों के गुणों के एक अंश का कथन करने से यह वाणी पवित्र हो गई, उनकी चरणरज की स्तुति करने से अमृत हो गई। आज पूर्णकाम स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज की सेवा करती है तब तो न जाने अमृत से भी अधिक किस भाव को प्राप्त होगी।

My speech has become pure by lauding a fraction of the qualities of these spiritual teachers of my forefathers and my narration has become immortal by describing the virtue of their sacred feet. Has it not become something more than immortal, today, by serving Swami Gurucharan Dass ji maharaj, a saint with all virtues.

अकामी श्रीस्वामी गुरुचरणदासो मिहिरवत्,
तमो हन्ति प्रोद्यन् वितरति नवोद्द्योतममितः।
त्रिधा तापं पुंसां हरति किल पापञ्च दहति,
ध्रुवं शापं तेषां शमयति सदेत्यस्मि चकितः ॥

निष्काम स्वामी गुरुचरणदासजी सूर्य के समान अन्धकार को हटाते हैं और उदीयमान होते हुए चारों ओर नवीन प्रकाश को वितरण करते हैं इस में कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु सूर्य के समान होते हुए भी जो वे जन-साधारण के तीन तापों को हटाते हैं पापों को जलाते हैं और शापों को शान्त करते हैं इसलिए मैं चकित हूं।

No wonder ! Swami Gurucharan Dass a man free from any wish does away with darkness like a rising Sun and spreads his light every where, but still I am astonished to see that he, inspite of being as hot as Sun, does away with the three mental agonies of mankind, burns the sin and placates the curse.

अयं मे चन्द्राभः प्रकृतिषु विभात्याकृतिषु च,
द्विजेशो नक्षत्राधिपतिरपि चायं बुधगुरुः ।
सुगौराङ्गः सोमः परमिह कलङ्काङ्करहितो,
न च क्षीणो जातु क्वचिदिति महाविस्मयकरः ॥

प्रकृति और आकृति दोनों में वे मुझे चन्द्रमा-से लगते हैं। वे द्विजराज (श्रेष्ठ ब्राह्मण) हैं नक्षत्राधिपति नहीं हैं अर्थात् क्षत्रियों के स्वामी हैं और बुधों के—विद्वानों के गुरु—हैं। चन्द्रमा भी द्विजराज (ब्राह्मणों का राजा) है अनक्षत्राधिपति नहीं है अर्थात् नक्षत्रों का स्वामी है और बुध का गुरु (पिता) है। स्वामी जी चन्द्रमा के समान उज्जवल देह तथा सौम्य हैं। किन्तु कलंक के अंक से मुक्त हैं, कभी क्षीण नहीं होते नित्य वर्धमान-कीर्तिमान हैं। अतः बड़े विस्मयकारी हैं।

To me, he looks like moon in appearance as well as nature. Moon is king of Brahmins, the master of Nakshatras (the planets) and father of Budh (the mercury). And Swamiji is a king of Brahmins, a spiritual master of kshatriyas and the preceptor of Budhas (the scholars) but still what surprises me most is the fact that he does not possess any blot like moon does and he never fades.

अयञ्चैकोऽप्यग्नित्रयमिह महायज्ञकरणा–
त्समस्याप्याह्वेयः किल गृहपतेर्दक्षिणतया।
नयत्येतत्साक्षाद् विबुधगणमेवाखिलहुतं,
परं चित्रीयेऽहं न च दहति नोत्तापयति च॥

यह स्वामीजी अकेले ही बड़े-बड़े यज्ञ करने के कारण तीनों अग्नियों के समान हैं। सभी धार्मिकों के आह्वानीय (बुलाये जाने योग्य) गृहपतियों या गृहस्थों के हितकर-गार्हपत्य और सबसे समान सद्भाव रखने के कारण वे दक्षिण हैं। जनता द्वारा इन्हें जो कुछ दिया जाता है वह सब देवकार्यों और विद्वत्सम्मान के द्वारा देवताओं या विद्वानों के पास पहुँचा देते हैं। पर मुझे आश्चर्य होता है कि अग्नियों के समान तेजस्वी होते हुए भी वे न किसी को जलाते हैं और न तपाते हैं।

He is like the three gods of fire (Ahvaniya, Garhpatya and Dakshina) as he has done many yajnas (oblations) himself. Worshipped by all the religious persons he possesses a special liking for the householders (grihasth) and is well known for his impartiaility to all. Whatever the public gives him, he spends it in religious rites or gives it to the euridites or gods. Is it not amazing that he, inspite of being like fire neither enflames nor kindles any one.

परं ज्योतिः साक्षादविषयतया वाङ्मनसयोः—
सदा सत्यं ज्ञानं प्रविततमनन्तं ध्रुवमयम् ।
रसो वै सोऽयं नः प्रथित इह लोकेषु महतां,
महानामायोगो भवति विरसोऽस्मादृत इति ।।

वाणी से अवर्णनीय और मन से अचिन्तनीय होने के कारण स्वामीजी सर्वदा व्यापक, अनन्त, सत्य और नित्य ज्ञान स्वरूप होने से परम ज्योति (ब्रह्म) हैं । वे इस लोक में निश्चित ही रस रूप से प्रसिद्ध हैं क्योंकि उनके विना वड़े-वड़े उत्सवों का आयोजन नीरस रह जाता है ।

Being indefinable in speech and incogitable to mind Swamiji is like ever-extensive, eternal, real, immutable knowledge of the supreme light or the Brahma. He, definitely, dwells as savour in all life, that is why, in his absence all the magnificent functions become lifeless.

असावस्त्याकाशः प्रददंवकाशं त्रिजगताम्,
असङ्गो व्याप्तः सन् स्थित इह सदा शब्दगुणकः ।
परं नासौ शून्यः सकलगुणपूर्णान्तिरतये—
त्यमुष्मिन्नाश्चर्यं जनयति किलास्मिंश्च जगति ॥

वे तीनों लोकों को आश्रय देते हुए भी असङ्ग हैं व्याप्त हैं और सदा कीर्तिमय शब्द रूपी गुण वाले हैं अतः आकाश के समान स्थित हैं परन्तु समस्त गुणों से परिपूर्ण होने के कारण वे शून्य नहीं हैं इसलिए वे इस लोक और उस लोक में आश्चर्य-जनक हैं ।

Like sky, that harbours all renowned voice but still manages to remain void or evacuated and fills the universe with ethereal fluid, he harbours the three Worlds but still remain free from worldly attachments and pervades the universe. The sky, full of these qualities is a cypher, but he, the resort of these qualities, astounds everyone as he is perfect, real and eternal.

बहिश्चान्तर्जानन् प्रतिजनमसौ प्राणयति यत्,
ततो लोके वातः प्रतिलगति मे सर्वगतया ।
परं सर्वं स्तुन्वन्वहति किल सौगन्ध्यमखिलं,
स तांस्तानुत्पाताञ्छमयति ततोऽस्त्यद्भुततरः ॥

प्रत्येक व्यक्ति को बाहर अन्दर से जानते हुए वे अनुप्राणित करते हैं, सर्वत्र जाते हैं अतः मुझे वे पवनरूप प्रतीत होते हैं। किन्तु वे सबकी स्तुति करते हुए सुगन्ध ही फैलाते हैं, निन्दारूपी दुर्गंध नहीं फैलाते तथा उन उन उत्पातों को शान्त करते हैं अतः अत्यन्त अद्भुत हैं। क्योंकि पवन तो दुर्गन्ध भी फैलता है और उत्पातों का भी कारण है।

He is wonderful as he knows the ins and outs of every one and gives life to all. He is found every where, that is why he looks like the vital air to me. But he spreads only the fragrance of his applause for every one and never spreads the offensive smell of detraction. He modifies the disturbances unlike air that causes the disturbances and spreads the bad smell too.

स्वभावाच्छीतोऽयं भवति यदि सोष्मा क्वचिदपि,
प्रकल्प्यस्तत्राग्न्यातपपरिकरो वारिसदृशे ।
न चेत्कस्मात्क्लान्तिं हरति नवकान्तिं वितनुते,
कथं वा सन्तापं शमयति तृषं चापनयति ॥

स्वीमीजी जल के समान स्वभाव से शीतल हैं, यदि कभी कहीं वे ऊष्मा या गर्मी वाले लगते हैं तो वहाँ अग्नि या धूप जैसी किंसी वात का सम्वन्ध समझना चाहिए। यदि वे जल के समान न हीते तो वे लोगों की क्लान्ति या खेद को कैसे हरते उन्हें नई कान्ति कैसे देते उनका सन्ताप कैसे शान्त करते उनकी तृष्णा (प्यास या वासना) कैसे दूर करते।

Swamiji is as cool as water in nature. If ever, he is found hot, this may be due to his resemblance with water heated by fire or Sun. Like water, he does away with fatigue, weariness, harrassment and thirst of the mankind and gives them a new splendour.

पृथिव्यास्मात्क्षान्तिः सहनपटुता सर्वजनता—
श्रयश्चैवेत्याद्या ध्रुवमधिगताः सन्ति हि गुणाः ।
गुरुत्वं चैतस्मादधिकमिह कस्यास्ति विदितं,
तथाप्यस्या भारं परिहरति सोऽघौघजनितम् ॥

पृथिवी ने निश्चय ही स्वामीजी से ही क्षमा, सहिष्णुता और सब को आश्रय देने की पटुता इत्यादि गुण सीखे हैं। गुरुत्व भी स्वामीजी से बढ़कर और किसका प्रसिद्ध है तो भी वे पाप समूहों से उत्पन्न हुए पृथिवी के भार को धर्मप्रचार द्वारा हरते रहते हैं। अपने गुरुत्व का भार उस पर नहीं डालते।

As a matter of fact, the Earth has learnt the traits of forgiveness, endurance and harbouring from Swamiji. He is a man with maximum gravity, still he does not lade earth. Instead he unburdens the earth from sins by spreading religion.

हरिः शेषे शेते परमयमिहाशेषहृदये,
श्रुतिं ब्रह्माधीते स्मृतिमपि पुराणान्ययमहो।
समाधिं चापीशः श्रयति, तमसौ व्युत्थितिमपि,
प्रकुर्वंल्लोकानां भुवि विविधमुत्थानममलम् ॥

विष्णु भगवान् शेष पर सोते हैं और स्वामीजी अशेष हृदयों पर शयन करते हैं। ब्रह्मा केवल वेद पढ़ते हैं स्वामीजी वेदों के साथ धर्मशास्त्र और पुराणों का भी अध्ययन करते हैं (तभी तो वे श्रुति स्मृति पुराण प्रतिपादित सनातन धर्म का प्रचार करते हैं) शंकर सदा समाधि लगाये रहते हैं स्वामीजी समय पर समाधि और समय पर व्युत्थान भी करते हैं यदि वे व्युत्थान में न आवें तो लोगों का चारित्रिक उत्थान कैसे करें ?

God Vishnu rests on Shesh (nāg) where as swamiji rests in Ashesh (all) hearts. Brahma recites Vedas only but Swamiji goes through Dharma Shastras and Puranas too. God Shankar remains always in a state of Samadhi (meditation) whereas Swamiji comes out of this state from time to time for the uplift of the moral and character of the people.

सुधर्मेत्याख्याया ध्रुवमिह सभाया अधिपतिः
स इन्द्रो देवानां दिवि भवति नेता महिमवान् ।
सुधर्माणां तासामयमिह सहस्रं विरचयन्,
नराणां नेतृत्वं दधदतितरां ह्रेपयति तम् ॥

स्वर्ग लोक में इन्द्र देवताओं का महिमाशाली नेता है किन्तु केवल एक सुधर्मा नामक सभा का अधिपति है । स्वामीजी ने इस लोक में हजारों सुधर्मा (सनातन धर्म की) सभाओं की स्थापना करके मानवमात्र का नेतृत्व धारण करते हुए इन्द्र को अत्यन्त लज्जित कर दिया है ।

Indra, the leader of all the gods in Heaven, and the president of only one Sabha (Senate) known as Sudharma finds himself very low as compared to Swamiji, the founder of thousands of Sudharmas (Sanatan Dharma Sabhas) and the leader of all mankind.

हरेः शल्के सिन्धुर्लयमभूत पृष्ठे खलु जगत्
धरित्री दंष्ट्रायां दितिसुतपतिश्चापि नखरे।
रुषि क्षत्रं, बाणे दशवदन इत्यादि विदितं,
समं तत्तल्लीनं गुरुचरणदासप्रवचने ॥

मत्स्यावतार में हरि के शल्क में सागर, कूर्मावतार में उनकी पीठ पर जगत्, वराहावतार मैं दाढ़ पर धरती, नृसिंहावतार में नखों में हिरण्यकशिपु, परशुरामावतार में रोष में क्षत्रिय और रामावतार में वाण में रावण लीन हो गया था इत्यादि बातें प्रसिद्ध हैं किन्तु स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज के तो प्रकृष्ट वचनों (व्याख्यानों) में ये सब समाये रहते हैं।

It is well known that Lord Krishna absorbed—sea in his scales as Matsya, World on his back as Kurma, Earth in his jaws as Varah, Hiranya Kashipu in his nails as Nrisimha. Kshatriyas in his anger as Parashu-Ram and Ravana in his arrow as Rama, but all these seem to be absorbed in the speech of Swami Gurucharan Dass ji maharaj.

श्रुतीर्व्यस्यन्व्यासः प्रणयति पुराणान्यपि पुरा,
जयाख्यं तत्काव्यं ग्रथयति च गीतामिह मुनिः।
दधद्योगे भाष्यं विरचयति सूत्राण्यपि नवा—
न्ययं तच्चान्यच्च प्रथयति समग्रं प्रवचनैः ॥

महर्षि वेदव्यास ने वेदों का विस्तार करते हुए पुराणों की रचना की, जय नाम से महाभारत नामक काव्य बना कर उस में गीता को स्थान दिया, योगदर्शन पर भाष्य लिखा, वेदान्त दर्शन के नये सूत्र रचे और स्वामीजी उन सबका तथा अन्य वाङ्मय का भी प्रवचनों द्वारा विस्तार किया करते हैं।

Maharshi Ved Vyas extended Vedas, composed Puranas, wrote Mahabharatā or Jai including Gita, commented on Yog Darshan and created new precepts of Vedanta Darshan, where as Swamiji not only elaborates these through his preachings but also speaks on other topics of spiritual knowledge.

महर्षिर्वाल्मीकिश्चरितमिह रामस्य विमलं,
शुकः श्रीकृष्णस्याकृत निजगिरामेकविषयम् ।
इहान्येऽप्येकैकं किमपि समगायंस्तु मुनयः
परं स्वामी कृत्स्नं प्रकटयति तद् वाङ्मयमयम् ॥

महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम का निर्मल चरित्र और महामुनि शुकदेव ने श्रीकृष्ण का सरस चरित्र अपनी वाणी का विषय बनाया। अन्य महात्माओं ने भी एक ही एक स्वरूप का गान किया जैसे कबीर आदियों ने निर्गुण का और सूर आदियों ने सगुण का, तुलसी ने राम का, मीरा ने श्याम का। किन्तु स्वामीजी उस समस्त वाङ्मय को अपनी वाणी द्वारा प्रकाशित करते हैं।

Maharshi Valmiki recited the holy character of Lord Rama, Mahamuni Shukdeva described the ardent character of Lord Krishna and other sages too narrated the story of only one idol of Him, for instance kabir advocated Nirgun and Soordas sung the songs of Sagun but Swamiji displays whole of this literature in his speech.

इति ध्यायं ध्यायं मनसि दृढमेतत्कृतमभूद्,
यदेकस्मिन्नस्मिन्मतिरियमुपेयान्मम रतिम् ।
तया नुन्ना वाङ् मे भवति नहि खिन्नाध्वनि मनाग्,
भवेतां ते पङ्गोरपि सदवलम्बौ मम गिरः ॥

मन में इन सब बातों का ध्यान कर करके मैंने निश्चय किया कि मेरी बुद्धि इन एक महात्मा में रति प्राप्त कर रही है, वह उसे प्राप्त करे। मेरी इस बुद्धि की प्रीति द्वारा प्रेरित हुई मेरी वाणी पंगु है पर मति और रति-बुद्धि और प्रीति—दोनों उसका सुन्दर सहारा बन जायेंगे।

I thought over all these qualities of this great sāint and found myself fall in love with him. My speech, inspired by this mental love goes on composing poems without ever being tired. If at all it cripples, the mind and the heart come to its support.

धने नष्टे नष्टं नहि किमपि, नष्टन्तु किमपि
स्फुटं नष्टे स्वास्थ्ये, निखिलमपि नष्टे तु चरिते।
इति प्राज्ञैर्लोके चरितरचनारक्षणविधौ,
विशेषादायासो भवति करणीयः स्वचरितैः ॥

धन नष्ट होने पर कुछ नष्ट नहीं होता क्योंकि वह फिर अर्जित कर लिया जाता है, स्वास्थ्य नष्ट होने पर कुछ नष्ट होता है क्योंकि वैसा स्वास्थ्य कभी-कभी नहीं लौट पाता किन्तु चारित्र्य नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है। इसीलिये विद्वानों को अपने चरित्र द्वारा लोगों के चरित्र निर्माण और उसकी रक्षा के लिए प्रयत्न करना होता है।

"Wealth lost, nothing lost. Health lost, something lost, but character lost, every thing lost. That is why the scholars should build and save their character so that they are followed by their disciples."

चिनोत्यर्थान् शास्त्रेष्वथ च शुभमाचारमपि यो,
दिशत्याचार्योऽसौ भवति, न स वाचोच्चरितया ।
इति स्फूर्तिः काचिद् गुरुचरणदासं यतिवरं,
सदाचाराचार्यं कवयति सुपूर्ति विदधती ॥

जो शास्त्रों के अर्थों को चुनता है तथा सदाचार सिखाता है वही आचार्य कहलाता है। केवल उच्चारण की गई वाणी से कोई आचार्य नही बन जाता। इस विचार की कोई एक स्फूर्ति इस अत्यावश्यक कार्य की पूर्ति करती हुई संन्यासियों में श्रेष्ठ स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज जो सदाचार के आचार्य हैं। उनके विषय में कविता करने लगी है।

"One who selects the theme of Shastrās and preaches morality according to it is the true Acharya or preceptor. Simply by certain statements no body is entitled to become an Acharya', A trace of this thought inspired me to do the important task of telling the people by means of my poems about one and only one such preceptor of morality Swami Gurucharan Das ji maharaj, the best hermit of the times.

न वाङ्मात्रेणैव प्रकटितमभूद् धर्महृदयं,
ततः साक्षाद् देवस्तनुमधृत चक्रे सुचरितम् ।
चरित्रं तस्येदं प्रथयति पवित्रं मयि बुधाः,
प्रसादं कुर्युस्ते कृतिपथनिदेशोत्सुकहृदः ॥

केवल वाणी से जब धर्म का मर्म प्रकट न हो सका तब ईश्वर ने भी रामकृष्णादि स्वरूप धारण किये और सुन्दर चरित्र प्रदर्शित किये । इसीलिए मैं पूज्य स्वामीजी के सच्चरित्र को ख्यापित कर रहा हूँ, कर्तव्य मार्ग का निर्देश करने के लिए सदा उत्सुकहृदय विद्वज्जन मुझ पर कृपा करें ।

The theme of religion cannot be manifested only through talks that is why He, the almighty, had to appear as Rama Krishna, and others to put a model of character before people. Pleased be the scholars, who always brighten the path of duty. as I am doing a fraction of their work by portraying the wonderful character of Swamiji.

न चेद् वर्तेतासौ स्वयमिह शुभे वर्त्मनि विभुः,
कथं सन्दिग्धार्था श्रुतिरनुवदेद् धर्ममलम् ।
कथं वा तं लोकः श्रयतु, नयतु प्रोन्नतपदं,
मनुष्यत्वाद्दैवं स्वमिति भगवान् सोऽवतरति ।।

यदि स्वयं ईश्वर शरीर धारण करके शुभ मार्ग पर न चलते तो सन्दिग्ध अर्थों वाले वेद निर्मल धर्म का वर्णन कैसे करते। लोग उस धर्म का आश्रय कैसे लेते और धर्म के द्वारा मनुष्यता में से उन्नत पद वाले देवत्व को कैसे प्राप्त करते, इसीलिए तो ईश्वर अवतार लेते हैं।

Had the God not incarnated himself, the vedas full of dubious purport would have been unable to discribe the religion in its true sense.

And but for his incarnation, it would have been impossible for the people to follow this (vedīc) religion and acquire godliness through manhood.

त्रिभिः सोऽयं रूपैर्दशभिरवतीर्णः, कतिपये
चतुर्विंशत्या वा विदधति बुधास्तस्य गणनम्।
असङ्ख्येयास्तस्याविरतमवतारा: खलु हरे-
रितीमं सिद्धान्तं वयमिह समाश्रित्य सुखिनः ॥

कुछ लोग कहते हैं कि वह ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीन रूपों में अवतार लेते हैं कुछ कहते हैं वह मत्स्यादि दस रूपों में अवतार लेते हैं और कुछ चौबीस अवतारों की गणना करते हैं। हम तो 'हरि के अवतार सदा असङ्ख्य है' इस सिद्धान्त का आश्रय लेकर सुखी हैं।

Some people say that He displays himself as three gods, Brahma, Vishnu and Mahesh. Others think that He has ten descents as Matsya, Varah etc. Still there are many who count as many as twenty-four exhibitions of Him, in various forms. And we believe in the theory that He has infinite incarnations.

युगेऽस्मिञ्ज्ञानार्थं गुरुगणयुतः शङ्करगुरु—
स्तथाऽ चार्यैर्युक्तो हितगुरुरभूद् भक्तिधृतये ।
प्रतापाद्या वीराः समधुरिह जात्यर्थमुदयं,
दयानन्दाद्यास्ते पुनरिह समाजार्थमभवन् ।।

इसी युग में वेदव्यास, शुकदेव, गौडपाद, गोविन्दपाद आदि गुरु-परम्परा के साथ जगद्गुरु शङ्कराचार्य ने ज्ञान के लिए अवतार लिया। रामानुज, निम्बार्क, माध्व और वल्लभ आदि आचार्यों के साथ श्री हितहरिवंश महाप्रभु ने साधन रूपा और साध्यरूपा भक्ति के लिए अवतार धारण किया। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी आदि वीरों ने जाति के लिए अवतार लिया तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि समाज के लिए प्रादुर्भूत हुए।

Even in this age He incarnated himself as Gurus—Ved Vyas, Shukdev, Gaurpad, Gobind Pad and Shankaracharya for imparting knowledge, as Acharyas—Ramanuj, Nimbark, Madhva, Vallabh and Shri Hit Harivansh Mahaprabhu for elaboration of Sadhana and Sadhya Bhakti, as worriers—Maharana Pratap, Kshatrapati Shivaji and others for the uplift of their nation and as Swami Dayanand for social welfare.

विभूती पश्यामस्तिलक इति गान्धीति विदिते,
अभूतां ये राष्ट्रोद्धृतिपरतया नेहरुयुते।
तथा धर्मोद्धारे स्मृतिपथमयं पण्डितमहा—
मनो-गोस्वाम्याद्यैर्गुरुचरणदासोऽवतरति ॥

लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक और महात्मा गान्धी इन दोनों विभूतियों को जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं के साथ हम राष्ट्र का उद्धार करने के लिए प्रकट हुआ देखते हैं। ऐसे ही धर्म का उद्धार करने के लिए महामना मदनमोहन मालवीय व्याख्यान वाचस्पति पं० दीनदयालु और गोस्वामी गणेशदत्तजी आदि के साथ स्वामी गुरुचरणदासजी का अवतार हुआ है।

He appeared as Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, Mahatma Gandhi and Jawahar Lal Nehru for the salvation of the Nation. Similarly He exhibited himself as Vyakhyān Vāchaspati Deen Dayalu Sharma, Mahamana Madan Mohan Malviya, Goswami Ganesh Dutt and Swami Gurucharan Dass for the revival of religion.

विलासो विद्यानामिह निजनिवासोऽथ तपसां,
समुल्लासोऽर्थानां नियमितविकासोऽथ वचसाम् ।
अघानां निर्ह्रासो गुणगणविभासोऽथ सुधियां,
धियामन्तर्हासो गुरुचरणदासो विजयते ।।

विद्याओं के विलास, तपस्याओं के निवास, शास्त्रार्थों के उल्लास, वचनों के विकास, पापों के ह्रास, विद्वद्गुणों के प्रतिभास और बुद्धियों के अन्तर्हास स्वामी गुरुचरणदासजी विजय प्राप्त करते हैं, अर्थात् सर्वोत्कर्षेण विराजमान हैं।

The enjoyer of knowledge, the residence of austerity, the splendour of Shastras, the bloom of speech, the destroyer of sins, the monument of learning and the smile of wisdom-Swami Gurucharan Dass dwells Victorious every where.

प्रदेशे काश्मीरे प्रविलसति लावण्यनगरं,
नृणां नारीणाञ्च प्रतिभटितलावण्यभरितम्।
सरस्वत्याः पुत्रोदयनियतशापावधितया,
समुद्भूतं तस्मिन् प्रतिवसति सारस्वतकुलम् ॥

काश्मीर प्रदेश में लावण्य नामक नगर शोभायमान है जहाँ नरों और नारियों का सौंन्दर्यरूप लावण्य परस्पर स्पर्धा करता है। वहाँ पर सरस्वती को पुत्र प्राप्ति पर्यन्त मृत्युलोक में रहना पड़ेगा इस शाप की अन्तिम अवधि में उत्पन्न हुए सारस्वत के वंशज ब्राह्मणों का कुल निवास करता है।

There is a beautiful city called Lavanya in Kashmir. It is a city of beautiful men and women. Goddess Saraswati lived here as a result of a curse and gave birth to a son, whose generation is known as Saraswat Brahmins today.

कुलेऽस्मिन्विद्याद्यैर्विनयमहितैः सद्गुणगणैः,
समन्तादाकीर्णे समजनि महात्माऽर्भकतया ।
व्यतीतास्तस्यासन्नपठितवतो द्वादश समाः
पितृभ्यां स्निग्धाभ्यां प्रतिकलितबालोचितचितः ॥

विनय से पूजित विद्या आदि सद्गुणों से चारों ओर व्याप्त हुए इस सारस्वत कुल में ये महान् आत्मा बालक रूप में प्रकट हुए। स्नेही माता-पिता के द्वारा उनकी बालोचित चेष्टाएँ देखते देखते ही बारह वर्ष बीत गये, वे इन्हें कुछ भी पढ़ा लिखा न सके ।

This great soul Swami Gurucharan Dass incarnated himself as a child of this modest and educated family. His parents loved him and his deeds of childhood very much, that is why he could not study up to the age of twelve years.

अथैको दैवज्ञः पितुरिममयाचत्प्रणयतः,
परं स्नेहोद्रेकात्स न तमनुदातुं व्यवसितः।
त्रिकालज्ञाताऽसौ तमवददये ! मोहविवश—
स्त्वमासक्तो यस्मिन्न खलु तव स स्थास्यति गृहे ॥

तब एक दैवज्ञ ने उनके घर आकर बड़े प्रेम से उनके पिता से इनको माँगा किन्तु अत्यन्त स्नेह के कारण पिता इनको देने को तैयार न हुए। तब उस त्रिकालज्ञ ने इनके पिता से कहा 'अये, स्नेह वश होकर तुम जिस बालक में आसक्त हो यह बालक तुम्हारे घर में नही रहेगा।'

By this time an astrologer came to his father and said, "Give your child to me," but his affectionate father did not agree. At this the omniscient said, "O Man ! This boy whom you love so much will not remain with you".

न गेहे न ग्रामे न खलु तव पार्श्वे क्वचिदपि,
स्थितिर्देवैः क्लृप्ता तव तनुजनेः पर्यटनिनः ।
अयं देशाद्देशं भ्रमति च पुरा स्थापयति चा—
प्यनेकास्ताः संस्था जगति निजधर्मे रतिदधाः ।।

'घर में और ग्राम में ही नहीं, तुम्हारे पास कहीं' भी देवताओं ने इसकी स्थिति की कल्पना नहीं की है यह तुम्हारा पुत्र तो पर्यटनशील होगा। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में भ्रमण करेगा तथा वहाँ अपने धर्म में प्रीति रखने वाली अनेक संस्थाओं की स्थापना करेगा।

"His horoscope tells me that he will not stay even in this village, what to talk of home. He will go place to place for the establishment of many many religious institutes."

त्वयाऽसौ लब्धोऽभूत्सुकृतनिचयैर्नैकजनुषाम्,
कृता पुष्टिः स्नेहादधिकसुकृतोद्दीपनकरो ।
इदानीं त्वत्तोऽसावधिगतवपुःपोषणसुखः,
सुखार्थं लोकानां किमपि नवमाधास्यति महः ॥

'तुम्हें यह अनेक जन्मों के पुण्यों से प्राप्त हुआ, तुमने स्नेह से इसका पोषण किया जो तुम्हारे पुण्यों की और अधिक वृद्धि करने वाला हुआ है। तुम से शरीर और पालन पोषण का सुख प्राप्त करके अब यह लोगों के सुख के लिए कोई नवीन तेज धारण करेगा।'

"You have got him as a son due to the meritorious actions done by you in your previous lives, you have done the virtuous deeds of nourishing him in this life too, you are responsible for his physical and mental happiness and he will work with a new spirit for the happiness of the people."

तवैकस्योद्धारं कलयितुमयं नात्र जनितः,
परं त्वादृक्षाणामगणितजनानां हितकरः।
त्रिवर्गे मग्नानां समुचितसमत्वं ह्युपदिशन्,
क्रमादेतान्नेता ससुखमपवर्गस्य सरणिम् ॥

'अकेले तुम्हारा ही उद्धार करने के लिए यह यहां उत्पन्न नहीं हुआ है अपितु तुम्हारे जैसे असंख्य जनों का यह हित करेगा। जो लोग धर्म, अर्थ और काम इस त्रिवर्ग में डूबे हुए हैं उन्हें समुचित समता (सुखदुःख आदि में समान भाव) का उपदेश देकर यह क्रमशः सुखपूर्वक अपवर्ग या मोक्ष प्राप्त करने के मार्ग पर ले जायेगा।'

"He has not taken birth for your deliverance only, He has come on this Earth for the renovation of countless people of your type. He will preach about the concept of indifference (between the pleasure and sufferings) among the people crazy for religion, wealth and lust and will show them the path of true salvation".

इति श्रुत्वा तातो दशरथ इव क्लिष्टहृदयोऽ-
प्यमुं तस्मै प्रादात्कुशिकतनयायेव तनयम् ।
गिरः संसिद्धानां सकृदपि निविष्टाः श्रुतिपुटे,
विवेकं वैराग्यं सपदि जनयन्त्येव च शमम् ।।

उस दैवज्ञ के यह वचन सुन कर पिता महाराज दशरथ के समान हृदय में बहुत दुःखी हुए। तो भी उन्होंने इस प्राणप्रिय पुत्र को विश्वामित्र जैसे इस ब्राह्मण को सौंप दिया। सिद्ध पुरुषों के वचन एक वार भी कानों में पड़ जायें, सुन लिए जायें तो वे शीघ्र ही विवेक वैराग्य और शम को उत्पन्न कर देते हैं।

The words of this omniscient made his father very sombre but still just like Dashratha who gave his sons to Vishwamitra, he gave his beloved son to this Brahmin. The words of a divine personage if heard once, soon generate wisdom, apathy and tranquility.

कुमारोऽसावेको गुरुचरणदासः पथि चलन्
गृहासक्तिं घोरां क्षयमनयताराग्निशिचरीम् ।
ततोऽस्मिन् संसिद्धे निजमखमुखे तिष्ठति हठा—
दयं मोहं शोकं समहरत मारीचसुभुजौ ॥

गुरुचरणदास नामक इस एक कुमार ने उस ब्राह्मण के पीछे जाते हुए मार्ग में (ताड़का) राक्षसी जैसी घोर गृहासक्ति का नाश कर दिया अर्थात् मन से घर की ममता निकाल दी। और फिर जब वह सिद्ध दैवज्ञ अपने यज्ञादि कार्यों में संलग्न हुआ तब राम के समान इस कुमार ने मारीच और सुबाहु जैसे प्रबल शत्रु मोह और शोक को भी मार दिया।

Following this Brahmin, he killed his lust for home like Rama, who killed Tarka. In due course of time the ascetic performed the sacred oblations (Yagnas), he got rid of delusion and dolour like Rama, who got rid of Mārich and Subāhu.

अथो रावल्पिण्डीमनयत तमेनं स मिथिलां
धनुः शैवं यस्यामयमदलताहङ्कृतिमयम् ।
ततो विद्या सीता गुरुजनविनीता तमुदगाद्
यया दीप्तं पश्यन् गुरुरमुमगान्मोदमतुलम् ॥

इसके बाद वह दैवज्ञ इसको मिथिलापुरी जैसी ज्ञानमयी नगरी रावलपिण्डी में ले गया जहाँ इसने शिव धनुष जैसे भारी अहंकार को तोड़ दिया । तब गुरु रूपी जनक द्वारा लाई गई विद्यारूपी सीता इसे प्राप्त हुई, जिससे इसको देदीप्यमान देख कर वह दैवज्ञ गुरु (विश्वामित्र के समान) अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुआ ।

After this he went to Rawalpindi, a city as sapient as Mithilapuri with this sage, where he broke the Shiv Dhanusha of his proud into pieces. Here his Guru unparted knowledge to him in the way in which Janak gave Sitā to Rama. This made him glorious and delighted his Guru.

बुधो बालानन्दस्तमिममचिरात्प्राज्ञमकरोत्
जयार्थं चानैषीदथ परशुरामस्य वसतिम् ।
इति श्रीरामस्याखिलमपि चरित्रं निगमय-
न्नयं दिव्यास्त्रं वाऽध्यगमदखिलं शास्त्रनिचयम् ॥

यहाँ वालानन्द नामक विद्वान् ने इस बालक को विद्वान् बना दिया और वे इसे विद्या द्वारा विजय प्राप्त कराने के लिए परशुराम के आवासस्थान (पेशावर) में ले गये। इस प्रकार भगवान् श्रीराम के सम्पूर्ण चरित्र का अनुसरण करते हुए इस बालक ने दिव्यास्त्रों जैसे समस्त शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

An euridite named Balanand turned him into a scholar and took him to Peshawar, the native land of Parashu Ram, to make him victorious in the field of knowledge. Lord Rama received the knowledge of Divyastras (the divine weapons) and he, following his character received the knowledge of shastras.

यदावाप्यानेन क्वचन वचनं वृष्टिरचनं
क्वचिद्वादाम्भोदप्रविशकलने मारुतमयम् ।
क्वचित्तस्याऽऽपाने भृशमुरगवेगं विरचितं
क्वचित्तेषां हाने गरुडजवमाख्यापितमभूत् ॥

जिन शास्त्रों का सहारा लेकर इसने कहीं पर्जन्यास्त्र जैसा धाराप्रवाह प्रवचन किया, कहीं प्रतिवादी के वादरूपी मेघों का खंडन करने के लिए आँधी जैसा व्याख्यान दिया जो वायव्यास्त्र जैसा हुआ । कहीं प्रतिवादी के धुवाँधार वादरूपी पवन को पीने के लिए उरगास्त्र जैसा तीव्र भाषण दिया । कहीं प्रतिवादी के उरगास्त्र जैसे तीव्र व्याख्यान का खण्डन करने के लिए गारुडास्त्र जैसा वेगयुक्त भाषण किया ।

This knowledge of Shastras enabled him to rai[n] and storm like Parjanyastra and Vayavyastra for th[e] condemnation of his opponent. At times he becam[e] as vigorous as Urgastra for doing away with th[e] stormy speeches of an arguer. At places, he becam[e] ardent like Garudastra for defeating his foe, wh[o] spoke as vigorous as Urgastra.

क्वचित्तद् व्याख्यानं गरुडजवरोधाय समभूत्
अहो साक्षान्नारायणसदृशमित्यस्ति विदितम् ।
इतीमां दिव्यानां प्रहरणवराणामनुकृतिं
प्रकुर्वन् शास्त्रीयैः प्रथितिमगमत्तैः प्रवचनैः ॥

कहीं प्रतिवादी के गरुड़ के समान वेग वाले वाद को रोकने के लिए उसका व्याख्यान साक्षात् नारायणास्त्र सिद्ध हुआ। इस प्रकार विशिष्ट दिव्यास्त्रों का अनुकरण करते हुए यह गुरुचरण दास किशोरावस्था में ही अपने उन शास्त्रीय व्याख्यानों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर गया।

His preachings proved to be Narainastra for making the Garudastra like fast speeches of the opponent ineffective. Thus using the Shastras like Divyastras he became famous in his adolescence.

विशिष्टैर्यंच्छिष्टैर्निगदितमभूदाक्षपदिकं
सकाणादं पातञ्जलमनुगतं कापिलमपि ।
क्रमाज्जैमिन्युक्तं सकलमथ वैयासिकमतं
तदेष स्वायत्तीकृतमदिशदेभिः प्रवचनैः ॥

इसको पढ़ाते समय विशिष्ट विद्वानों ने कणाद के वैशेषिक दर्शन के साथ जो अक्षपाद के न्यायदर्शन की व्याख्याएँ की थीं तथा पतञ्जलि के योगदर्शन के साथ कपिल के साँख्यदर्शन पर प्रवचन किए थे एवं जैमिनि के मीमाँसादर्शद के साथ वेदव्यास के सभाष्य वेदान्त दर्शन का क्रमशः व्याख्यान किया था, उस सबको आत्मसात् कर लिया है यह बात इसने अपने उन प्रवचनों द्वारा प्रकट कर दी।

The ability of his teachers is shown by his preachings which reveal that he has grasped the complete knowledge of Kanad's Vaisheshik Darshan along with the commentry of Nyaya-Darshan written by Akshapād, Patanjali's Yog-Darshan alongwith the comments on Sankhya Darshan written by Kapil and Gemini's Minansa Darshan along with the annotation of Vedanta Darshan done by Ved Vyas.

स साहित्ये प्रज्ञां प्रकटयति सौहित्यमथ यत्
पदेऽपि प्रब्रूते धृतकुशलतां दार्शनिकताम् ।
महाकाव्ये काञ्चिद्रसिकमणितां व्यञ्जयति यत्
तदेतत्सत्सङ्गागतगुणगणत्वं प्रथयति ।।

साहित्यशास्त्र में भी जो इसने अपनी प्रज्ञा और तृप्ति को प्रकट किया, व्याकरण शास्त्र पर भी प्रवचन किये तथा दर्शनों में कुशलता और महाकाव्यों में रसिकता प्रकाशित की यह सब विद्वज्जनों के सत्सङ्ग से आये हुए गुणगणों के अस्तित्व को ख्यापित करना था।

"The Company of these scholars developed in him the wisdom and gratification in literatures proficiency in Vedantas and taste for epics".

इति प्रब्रूयुस्तेऽवितथमिह जानन्ति नहि ये,
वयं तु प्रब्रूमः किमपि कलयन्तोऽत्र परमम्।
समे विद्यावन्तः सरित इव विद्यानिधिमिमं
निजा विद्या नेतुं दधुरिह गुरुत्वेन गिरिताम्॥

ऐसी बात तो वे लोग कहेंगे जो वास्तविकता को नहीं जानते हम तो परमभाव को जानते, अतः हम तो यही कहते हैं कि सभी विद्वानों ने विद्या के सागर जैसे इस महात्मा को नदियों जैसी अपनी-अपनी विद्याएं प्राप्त करा दीं और गुरुभाव से गिरिभाव प्राप्त कर लिया अर्थात् गुरु पर्वत थे, विद्याएं नदियाँ थीं और यह महात्मा सागर थे।

Only those will speak like this who do not know him perfectly well. But I, knowing the subtle truth, believe that he has acquired this knowledge like a sea who gets rivers from mountains. These scholars were like mountains because of their gravity.

नचेदिष्टैर्वादैरयमजयदारादि रिपुबलं,
ततो विद्यास्तास्ता अधिगत इति स्यान्नविदितम्
कथं नामैतस्मिन् प्रथितमपि नैमित्तिकपदा–
न्निमित्ते प्राक्सत्त्वं तदिह विपरीतं समभवत् ।

यदि यह अपने प्रिय प्रवचनों द्वारा प्रतिवादियों को परास्त न कर लेते तो इन्होंने वे वे विधाएँ प्राप्त कर ली हैं यह ज्ञान न होता यह सत्य है विद्याएँ प्राप्त करना कारण है और प्रतिवादियों को परास्त करना कार्य । कारण के बाद कार्य होता है यह प्रसिद्ध सिद्धान्त इस महात्मा में विपरीत हो गया था क्योंकि विद्याध्ययन से पहिले ही इन्होंने प्रतिवादियों को परास्त करना प्रारम्भ कर दिया था ।

His wonderful speeches, responsible for his victory over his opponents, showed his ability. As a matter of fact, getting knowledge is a cause and defeating opponents is an effect. But here, he reversed the order of cause and effect because he defeated his opponents before completing his education.

कटाक्षे दादल्खानभिधनवपिण्डे लवपुरे,
ततो वाराणस्यामलमकुरुताद्धा गुरुकुलम् ।
अवाप्तः प्रावीण्यं सपदि सकले शास्त्रनिचये,
स तीर्थानां यात्रास्वभिरुचिमधात्पावनकरीम् ॥

इसने कटासराज, पिण्डदादल खान, लाहोर और बनारस में गुरुगृहों को अध्ययन द्वारा अलंकृत किया और शीघ्र ही समस्त शास्त्रों में प्रवीणता प्राप्त कर ली। अब इस महात्मा ने तीर्थ यात्रा के लिये पवित्र करने वाली रुचि धारण की।

He got his education at Katasraj, Pind Dādal Khan, Lahore and Benaras and glorified the educational institutes by the proficiency he attained in all the Shastras. Then he developed the sacred interest for pilgrimage.

प्रयातो नेपालान् स परिहितकौपीनवसनो,
विदां सम्पर्केणाध्यदमगखिलं न्यायविचितम् ।
ततो नव्ये प्राच्येऽपि च समगतेरस्य रसना—
व्यवच्छेद्यावच्छेदनपटुरभूद् उत्कटतया ॥

फिर यह महात्मा केवल कौपीन धारण कर नेपाल देश में गया जहाँ इसमें विद्वज्जनों के समागम से नव्य न्याय के मर्मों को विस्तार से समझा। जिससे इसकी वाणी नव्य और प्राच्य दोनों प्रकार के न्यायों में अवच्छेद्य तर्कों के अवच्छेदन में उत्कट पटु हो गई।

He went to Nepal, wearing only a kopeen (sacred cloth), where he learnt the basic facts of "Navya Nayaya" in the company of various scholars. This enabled him to reason out the reasonable arguments.

अमुष्मिन् भावेनाध्यगमदनुयोगीति पदवी—
मभावेनाप्याप्नोदिह च प्रतियोगीत्यपि पदम् ।
ततो न्याये ख्यातिं दधतुरिह ते द्वे अपि पदे,
स्वसद्भावेनाद्यं त्वविरतमभावेन च परम् ॥

इस महात्मा में भक्तिभाव रखने वाला व्यक्ति अनुयोगी या अनुगामी संज्ञा को प्राप्त हुआ तथा जो भक्तिभाव-शून्य था वह प्रतियोगी कहलाया तभी न्यायशास्त्र में अनुयोगी और प्रतियोगी यह दोनों पद ख्याति को प्राप्त हुए । सद्भाव या अस्तित्व से पहला अनुयोगी और अभाव से दूसरा प्रतियोगी ।

His follswers existed and his opponents lost their existence. Consequently, therefore, in "Nyaya Shastra"—one who exists is known as a follower (Anuyogi) and one who loses existence is called an opponent (Pratiyogi).

हरिद्वारं यातो गुरुजनकृपातो मुहुरयं,
स्थितं गङ्गाकुल्यातटपरिसरे चाश्रमपदम् ।
यदध्यास्त ब्रह्म स्वयमपि स दासो महिमवान्,
महात्मा लोकानां सततमुपकारेषु निरतः ॥

नेपाल से लौटकर गुरुजनों की कृपा को प्राप्त हुए यह महात्मा हरिद्वार गये और वहाँ गङ्गा जी के किनारे पर स्थित अवधूत मण्डलाश्रम में पहुँचे । जहाँ पर कभी स्वयं महिमाशाली महात्मा ब्रह्मदास जी लोकोपकार में सदा तत्पर होकर निवास करते थे ।

Blessed by his Gurus, on his return from Nepal this ascetic went to Avdhoot Mandalashram situated at the shore of Ganga canal in Haridwar. Here, lived the benevolent and virtuous sage Baba Brahma Dass.

निरीकारिश्रेष्ठा वसतिरवधूताधिवसति—
स्तदाख्याभिः ख्यातं तदिदमभवद्वै कनखले।
तदध्यष्ठादास्थापरिगतमतिः शासनपटु—
र्बंदुश्रीदासान्तः स खलु शिवरामो यतिवरः॥

यह आश्रम कनखल में निरीकारियों की कुटिया, अवधूतों का आश्रम तथा उन (बावा ब्रह्मदास जी की कुटिया) के नाम से विख्यात है। इस आश्रम में गुरुवर के प्रति आस्था और श्रद्धा से व्याप्त बुद्धि वाले शासनकुशल स्वामी श्री शिवरामदास जी महाराज अधिष्ठाता या प्रबन्धक थे।

This Ashram is famous in Kankhal as Niri karyon ki kutia' 'Avdhooton ka Ashram,' and 'Baba Brahma Dass ki kutia.' The well known administrator Swami Shiv Ram Dass ji maharaj, who had faith and respect for his Guru, was the incharge there.

प्रभावो मूर्तोऽसौ किल तनुधरः स्नेह उदितो,
ऽधिकारः साकारो विलसति च साक्षादुपरमः ।
सदाचारो देही भजनमथ लब्धाकृति परं,
जनानां भावानामभवदिह चैकः स शरणम् ॥

श्री स्वामी शिवरामदास जी महाराज मूर्तिमान् प्रभाव थे, शरीरधारी स्नेह थे, साकार अधिकार थे और साक्षात् उपराम—विषय वासनाओं के शान्त हो जाने से उदासीनभाव—थे । वे देह-धारी सदाचार थे, वे आकृतिप्राप्त भजन थे तथा जनभावनाओं के एकमात्र आश्रय थे अथवा जनों और उनकी भावनाओं के सदा एकमात्र रक्षक थे ।

Shri Shiv Ram Dass ji maharaj was a model of effect, physique of affection, idol of authority, corporeal of character, figure of worship and the only resort of the people and their feelings.

ततो दीनान् हीनान् प्रति नवदयार्द्रादधिगतः
कषायं दीक्षाञ्च प्रविकसितकान्तिः स शुशुभे।
'निजं मन्त्रं लब्ध्वा तदधिपतिदेवाध्युषितहृत्,
प्रदीप्तः स्याद्योगी बहिरपि तु मन्त्रार्थमहसा ।।

दीनहीन जनों के प्रति सदा दयापूर्ण हृदय वाले उन महन्त श्री शिवरामदास जी महराज से कषाय (भगवे वस्त्र) और मन्त्रदीक्षा को प्राप्त हुए श्री स्वामी गुरुचरणदास जी की कान्ति और विकसित हो गई और वे अधिक सुशोभित हुए। क्योंकि निजमन्त्र को प्राप्त करके योगी जब उस मन्त्र के देवता को (ध्यान द्वारा) अपने हृदय में बसा लेता है तब वह मन्त्र और उसके अर्थभूत देवता के तेज से बाहर अन्दर दोनों ओर प्रदीप्त हो जाता है।

Like a yogi, whose ins and outs become luminious by the virtue of the God, who rests in his heart as a result of meditation of the sacred text (mantras). Swami Gurucharan Dass, too, become more radiant and magnificent after the initiation of sacred text (mantrās) and investiture of sacred clothes (kashai) by the tender hearted Mahant Swami Shiv Ram Dass ji maharaj.

इहानन्तैश्वर्यं पदुरपि स पीठाधिपपदं,
स्वयं नाङ्गीचक्रेऽनुजगतदयो राघव इव।
ततोऽयं पाण्डित्यं वहति गुरुपीठस्य गुरुवत्,
प्रकाशान्तो रामो वहति च महन्तेति पदवीम् ॥

श्री स्वामी गुरुचरण दास जी ने इस आश्रम में अनन्त ऐश्वर्य वाले पीठाधिपति (महन्त) पद को शासनकुशल होते हुए भी स्वीकार नहीं किया। उन्हें तो श्रीराम के समान अपने छोटे (गुरु) भाई के प्रति दया या प्रीति उमड़ आई थी। अतः महन्त पद छोड़ कर उन्होंने गुरूपीठ का एक आचार्य के समान पण्डित पद सँभाला तथा उनके छोटे (गुरु) भाई श्रीरामप्रकाश जी महाराज ने महन्त पदवी पाई।

Swami Gurucharan Dass, inspite of all the capabilities of a good administrator, did not accept the infinitely glorious post of mahanta of this Ashrama. Like Lord Rama, he left this post for his younger brother (a fellow disciple) Shri Ram Prakash ji maharaj and himself accepted the scholarly post of Pandit of this Ashrama.

अहो, यं यं सन्तः सहजमनुकम्पास्पदतयो-
ररीकुर्वन्त्येते स स भवति भव्यो गुणगणैः ।
इतीदं दृष्टं मे तपसि च जपे चैकमनसि-
प्रकाशान्ते रामे निजकृतिभिरेकाश्रमधरे ॥

अहो ये सन्त जिस-जिस व्यक्ति को सहज में ही कृपापात्र के रूप में स्वीक र कर लेते हैं वही वही गुणगणों के कारण श्लाघ-नीय हो जाता है यह बात मैंने जप तप में निरत रहते हुए सम्पूर्ण आश्रम की अकेले ही व्यवस्था करने वाले स्वामी रामप्रकाश जी महाराज में देखी ।

"Heigh ho! whosoever gets the favour of saints becomes praiseworthy," This I learnt when I saw the self-mortified devotee Swami Ram Prakash, who looked after the Ashrama all alone.

अयं सम्यक् सञ्चालयति सकलं चाश्रमपदं,
प्रतिष्ठा स्यादस्याधिकतरगरिष्ठेति मनसा ।
स्वकीयं वैदुष्यं प्रकटयति सौशील्यमपि यः,
समन्ताच्छ्लाघ्योऽसौ गुरुचरणदासो बुधवरः ॥

स्वामी रामप्रकाश जी आश्रम को बहुत अच्छी तरह चला रहे हैं, अब इस आश्रम की और भी अधिक प्रतिष्ठा हो इस विचार से जो स्वामी गुरुचरण दास जी महाराज स्थान-स्थान पर जाकर अपनी विद्वत्ता और सुशीलता का प्रकाशन करते हैं उन विद्वद्वरेण्य स्वामी जी की चारों ओर श्लाघा-प्रशंसा हो रही है।

Swami Ram Prakash is administering this hermitage omicably. Touring place to place, Swami Gurcharan Dess displays his knowledge and affability to make this Ashrama more and more virtuous. And he is being praised every where by the well-known eruidites.

इह द्वैताद्वैतानुगतमतवेदान्तविषयान्,
सदाऽभ्यस्यन्नन्यानुपदिशति स स्मादरभरात्।
परीक्षोत्तीर्णेभ्यो वितरति किलाचार्यपदवीं,
प्रशास्तिर्लोकोऽयं प्रवितरति तां योग्यविदुषे ।।

इन दिनों द्वैत और अद्वैत दोनों मतों के वेदान्त ग्रन्थों के विषयों का सदा अभ्यास करते हुए बड़े आदर भाव से जिज्ञासुओं के प्रति उपदेश करते हैं। सरकार तो परीक्षा पास करने वालों को आचार्य पदवी देती है किन्तु जनता योग्य विद्वान् को आचार्य पदवी प्रदान करती है।

Now a days he spends most of his time in reading the books of theology (Vedanta) based on the concepts of dualism (Dvait) and monotheism (Advait) and preaches these doctrines to the people urth reverence. The Government gives the masters' degree to only those who pass an examination but masses always call him a master (Acharya) who really possesses erudition.

स वेदान्ताचार्यः प्रवचनपटुस्तत्र विदुषां,
'महान् योऽनूचानः स न' इति गिरां लक्ष्यमभवत् ।
सदाचार्यैरर्च्यः सहसि महतामप्यधिपतेः,
पदं प्राप्तस्तेजो वयसि सदुपेक्षामगमयत् ।।

वेदान्त विषयक व्याख्यानों में अतिकुशल वे स्वामी गुरुचरण दास जी महाराज वेदान्ताचार्य कहलाते हुए 'हममें जो प्रवक्ता हो वही बड़ा है' इत्यादि वेदवाक्यों के लक्ष्य हो गये। आचार्यों के भी पूज्य एवं बड़े-बड़े धार्मिक नेताओं की सभाओं में भी अध्यक्ष पद प्राप्त करके स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि तेज की आयु नहीं देखी जाती।

This most learned and capable eloquent of theology Swami Gurucharan Dass is known as master of theology (Vedantāchārya) today proving the famous Vedic sentence that a propounder of sacred text is senior to all. Being honoured by the scholars and by presiding over various functions organised by the honourable and senior religious leaders, he has proved that a genius is most respectable irrespective of his age.

कथं श्रद्धेयं स्याद्यदिह भवतोऽध्यक्षपदवी–
तले वक्तारस्ते सदसि समभूवन् बुधवराः।
जनानामानन्दाः सततमखिलानन्दसदृशा,
न चेद्दृष्टा मे स्युः स्वयमु मघियानाख्यनगरे ॥

इस बात पर कैसे विश्वास किया जाता कि स्वामी जी की अध्यक्षता में बड़े बड़े विद्वान् सभा में वक्ता या व्याख्याता बनते रहे। अपने व्याख्यानों द्वारा जनता को आनन्द देने वाले कविरत्न पण्डित अखिलानन्द जी जैसे विद्वानों को यदि मैंने स्वयं झंगमघ्याना में इनकी अध्यक्षता में भाषण करते हुए न देखा होता।

I saw with my own eyes kavi Ratna Pandit Akhilanand, the jubilant speaker of the public, delivering his speeches in functions presided over by Swami ji. Does it not support the fact that he presides over the functions where the most learned and famous orators speak.

बुधो बुद्धिश्चन्द्रः सतनुरिव सङ्गीतनिगमो—
ऽप्यामुष्याध्यक्षत्वे कलयति स गायन् सफलताम् ।
वशिष्ठो वा वाग्मी सदसि शिवरामश्च महितो,
रथी शास्त्रार्थानां प्रमुदमयते माधवबुधः ॥

सङ्गीत शास्त्र के मर्मज्ञ पण्डित बुद्धिचन्द्र जी पीयूषमुनि इनकी अध्यक्षता में संगीत का कार्यक्रम रखते हुए सफलता अनुभव करते थे, उत्तम वक्ता प्रोफेसर वशिष्ठ एम० ए०, प्रतिष्ठित वक्ता श्री शिवराम सेवक और शास्त्रार्थ महारथी श्री माधवाचार्य शास्त्री भी उनकी अध्यक्षता में भाषण देते हुए आनन्द प्राप्त करते रहे ।

Pandit Budhichandraji Piyush muni, the expert musician of his times felt himself efficacious whenever he got a chance to present his classical programme under his presidency. The eminent speaker professor Vashishtha M.A., The eloquent orator Shri Shiv Ram Sevak and the best spokesman of Shastras Shastrartha maharathi Shri Madhavacharya Shastri too, felt themselves delighted by preaching in functions presided over by him.

अहो स्वातन्त्र्यार्थं प्रयतनशतान्यस्य मिषतो,
मनस्येका युक्तिः समजनि सुदेशं प्रति परा।
'इमे नानाभारोपनतमतयो हन्त गृहिणो,
यतन्ते यत्रार्थे किमिति यतयस्तत्र विरताः॥

जब स्वामी गुरुचरणदास जी महाराज ने देखा कि देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये सैंकड़ों प्रयत्न किये जा रहे हैं तो इनके मन में स्वदेश या सुन्दर देश भारत के प्रति एक युक्ति जागरित हुई। ये गृहस्थी लोग जो अनेक प्रकार के उत्तरदायित्वों से आक्रान्त बुद्धि हैं वे जिस स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न करते हैं उसके विषय में हम साधु लोग क्यों उदासीन हैं।

When Swamiji found that people were doing efforts for the freedom of Nation, he also decided to do something for his beloved motherland. He thought, "Why we, the saints free from all worldly attachments, are not doing anything for the freedom of the nation, where as the people with families (gri-hasthas) who have got their minds packed with the problems and responsibilities, are doing everything possible for this cause."

इतीवाध्यायान्तः समधिगतगम्यः स तरुण—
स्तपस्वी निश्चित्य स्वनवकरणीयं स्वहृदये।
गतः क्षिप्रं सत्याग्रहमकलयद् गुर्जरपदे,
गृहीतः कारायामवसदिह वर्षद्वयमपि ॥

यही बात मन में सोचकर जो कुछ जानना था वह सब जिन्होंने जान लिया था ऐसे स्वामी गुरुचरण दास जी नाम के इस तरुण तपस्वी ने अपने हृदय में अपना नवीन कर्तव्य निश्चित करके गुजरात में जाकर शीघ्र ही सत्याग्रह में भाग लिया और वहाँ पकड़े जाने पर दो वर्ष कारागार में भी वास किया।

Thinking in this manner, this young ascetic, who knew what will follow next, decided to do his new duty. He went to Gujarat, participated in Satyagraha (civil disobedience) and was imprisoned for two years.

स कारायामारान्निगडिततनून् स्वैरमनसः,
समस्तांस्तान् भक्तान्निजजनिभुवोऽबोधयदिदम् ।
'इयं भूमिर्माता भवति च पिता धर्म इह न—
स्तदेतौ संसेव्यौ सममिह विमुक्तये स्पृहयताम् ॥

उन स्वामी जी ने कारगार में अपने पास ही शरीर से नियन्त्रित किन्तु मन से स्वतन्त्र उन समस्त मातृभूमि के भक्तों को यह वात समझाई—'यह भूमि हमारी माता है और धर्म हमारा पिता है, अतः मुक्ति या स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न करने वालों को इन दोनों की साथ ही साथ सेवा करनी चाहिये ।'

In jail, Swamiji advised his fellow prisoners, the physically imprisoned but mentally free patriots of the nation, "If you want freedom, you have to fight for the cause of religion also, because the nation is your mother obright but the religion is your father too."

न कामोऽसौ काम्यः क्षपयति किलार्थं यदि स वः,
स चार्थोऽनर्थः स्यादवति यदि धर्मं न परितः।
न धर्मोऽधर्मोऽसौ यदि हरति वो मोक्षपदवीं,
न मोक्षो मोक्षः स्याद्यदि जनिभुवो बन्धनकरः॥

'उस काम की कामना नहीं करनी चाहिये यदि वह तुम्हारे अर्थं को क्षति पहुँचाता है उस अर्थं को अनर्थं समझना चाहिये जो सर्वथा धर्मं की रक्षा नहीं करता वह धर्मं भी अधर्मं ही होगा जो हमारी मुक्ति या मोक्ष में वाधक है और वह मोक्ष मोक्ष नहीं हैं जो मातृभूमि के लिये बन्धनहारी न होकर बन्धनकारी हो।'

"Never have an inch nation for a desire, (kām) that destroys wealth (arth). The wealth, that does not safeguard the religion (Dharma) is useless. The religion, that comes in our way of salvation (Moksha) is not a religion. And the salvation, that binds your motherland instead of liberating her is no salvation."

परान् धर्मं ब्रह्माप्युपदिशति तस्मिन्मतिरियं,
समुद्भुता—'स्वामिन्, स्वयमपि तपः संचर परम्।'
इति प्राप्तात्माज्ञः कृतिकुशलयोगीन्द्रनिचयं,
प्रपन्नो योगाङ्गानुभवविभवद्बुद्धिरभवत् ॥

इस प्रकार दूसरों को कहीं ब्रह्म और कहीं धर्म का उपदेश देते हुए स्वामी जी के मन में यह विचार आया—'स्वामी जी, आप स्वयं भी ब्राह्मणत्व और संन्यास के अनुरूप तीव्र तपश्चर्या कीजिये। इस प्रकार आत्मा की आज्ञा प्राप्त करके साधना में निपुण योगीन्द्रगण के पास जा जाकर योग के अङ्गों की साधना के अनुभव से स्वामी जी व्यापक विचार वाले हो गये।

Thus preaching religion and Brahma (the divine source of the Universe) Swamiji thought of doing difficult deads of devotion—penance and self-mortification himself according to the principles of monosticism (Sanyās) and Brahmanhood (Brahmanatva). Thus ordered by his insight Swamiji went to the ascetics of the highest order (yogindras). He learnt and experienced various purports of yoga from them and became a man of extensive thoughts.

महाराष्ट्रेष्वेको निभृतमथ सौराष्ट्रविषये,
तथा राजस्थाने न्यवसदभितो योगनिरतः ।
ततः सेवाधर्मप्रचलितमनाः प्राप्त परमो,
विशालास्ताः शाला व्यरचयदसौ गुर्जरपदे ॥

वे अकेले ही महाराष्ट्र और सौराष्ट्र में एवं राजस्थान में योग साधना में सदा निरत होते हुए एकान्त में ठहरे। तदनन्तर परम तत्त्व को प्राप्त कर सेवा धर्म की ओर मन के प्रवृत्त होने पर स्वामी जी ने गुजरात में आकर विशाल शालाओं (धर्मशाला-पाठशाला आदियों) की स्थापना करवाई।

He accomplished yoga in the lonely places of Maharashtra, Saurashtra and Rajasthan all alone. After reaching his supreme goal (param tatva), he decided to follow the path of service. He came to Gujarat and established many inns (Dharamshalas) and seminaries (pathshalas) there.

ततो यातो वाचाम्पतिरयमवाचामुदयकृद्,
विहारप्रान्तेऽथोत्कलजनपदे चोत्तरपदे ।
प्रभूतैर्धर्मोत्थैः प्रवचनवरै र्मन्दिरगणं,
समन्ताद्देवास्थापयदुचितपूजोपकरणम् ॥

वहां से निम्नवर्ग का उद्धार करने वाले और बृहस्पति के समान वाग्मी श्री स्वामी जी विहार, उत्कल एवं उत्तर प्रदेश में गये, जहां उन्होंने धर्मविषयक अनन्त व्याख्यानों द्वारा चारों ओर पूजा के उचित उपकरणों वाले मन्दिरगणों को स्थापित करवाया ।

From here, this saviour of the down-trodden, Swamiji, who is as eloquent as Vrihāspati went to Bihar, Utkal and Uttar Pradesh, where his numerous religious speeches inspired people to build beautiful temples full of all the necessary materials needed for worship.

अथायं पञ्चाम्बौ परशुपुरमागान्नशहरे-
ऽपि होतीमर्दाने ऽप्यकबरपुराचारसदयोः ।
प्रचारं धर्मस्याकलयितुमथो काबुलगतो,
जलालावादे प्रावददथ च कम्बोजनगरे ॥

इसके वाद वे पंजाव प्रदेश में परशुरामपुर (पेशावर) नशहरा, होतीमर्दान, अकवरपुरा और चारसद्दा में धर्म का प्रचार करने के लिये पधारे फिर काबुल में जाकर जलालावाद और कम्बोज नगर में धार्मिक प्रवचन किये।

After that he went to Parashurampur (Peshawar) Nashahra, Akbarpura and Charsaddā towns of Punjab for the manifestation of Hindu religion. From here, he moved to Kabul and preached in Jalalaad and Kamboj city.

ततः सीमाप्रान्तेष्वपि स हजरोबन्नुनगरे—
ऽथ कोहाटे कृत्वा जनमिह वशीभूतहृदयम् ।
बहुं हिन्दीविद्यालयगणमयं प्रादुरकरोत्,
तथा गैर्वाणीशिक्षणपटु च देवालयकुलम् ॥

वहां से पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में हजरो, बन्नू और कोहाट में जाकर लोगों को धार्मिक प्रवचनों से अपने अधीन हृदय वाला बनाकर स्वामी जी ने बहुत सी हिन्दी पाठशालाएं बनाईं तथा संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था वाले सनातन धर्म मन्दिरों की स्थापना की ।

Next he went to Hajro, Bannoo and Kohat, the districts of north-west India and won the hearts of the people by his impressive religious speeches. There he estimated many Hindi-schools and Sanatan Dharma temples, where Sanskrit was taught.

पुनः खानेवालं बहुबलपुरं झङ्गनगरं,
प्रयातो मध्यानामलमकृत वै पीरमहलम् ।
मियाँवाल्यां शेखूपुरसखजडाँवालविषये,
व्यधान्नानादेवालय - सहित - विद्यालयशतम् ॥

फिर पंजाब के खानेवाल, वहावलपुर, झंग, मध्याना पीरमहल आदि नगरों में पधार कर उन्हें अलंकृत किया । ऐसे ही मियाँवाली, शेखूपुरा, जड़ावालाँ आदि में भी सनातन धर्म मन्दिरों के साथ अनेक हिन्दी संस्कृत विद्यालयों की स्थापना की ।

Then he glorified khanewal, Bahavalpur, Jhang, Maghyand and Peermahal cities of Punjab by going there. Similarly he founded many Sanatan Dharma temples and Hindi-Sanskrit-schools in Miyanwali, Shekhupura and Jarawalan.

समेषामेवैषां यदयमकरोन्मण्डनविधिं,
ततो मन्ये मण्डीत्यभवदभिधानं सफलितम् ।
अमीषां मध्यानागगरमथवा झङ्गनगरम्,
जनिर्भूत्वाज्जाने यतिवरकृपाभाजनतरम् ॥

मैं तो समझता हूँ कि स्वामीजी ने इन सब स्थानों की जो मण्डनविधि (सजावट) की थी इसीलिए इन स्थानों का सफलनाम 'मण्डी' कहा जाता रहा। इनमें से भी झंग मध्याना को तो मैं अपनी जन्मभूमि से सम्बद्ध होने के कारण स्वामी जी की कृपा का विशेष पात्र मानता हूँ।

I believe that these places were known as Mandi (Market) due to the 'mandan vidhi' (decoration) done by Swamiji. I think that he cared for Jhang Maghyana very much, because it happens to be my birth place.

तयोर्मध्ये श्रीमत्परमगुरुनाम्ना वरकुटीं,
स्थितामाधीवालेत्यमलपदवाच्याम् अधिवसन् ।
असौ वर्षे वर्षेऽरचयदधिगोपाष्टमि मखं,
जनानां लक्षेषु प्रचुरमखशेषं तु वितरन् ।।

झंग और मघ्याना दोनों नगरों के मध्य में स्वामी जी के परमगुरु बाबा ब्रह्मदास जी महाराज की सुन्दर कुटिया-जो 'आधीवाल' के नाम से स्थित थी—में निवास करते हुए श्री स्वामी जी प्रतिवर्ष गोपाष्टमी के अवसर पर बड़ा भारी यज्ञ रचाया करते थे और लाखों नर-नारियों को यज्ञ का शेष प्रसाद देते थे ।

In between Jhang and Maghyana there exists a beautiful hermitage founded by Swamiji's Paramguru Baba Brahma Dass. This sacred Ashrama is known as 'Adhiwal Ki Kutiya' (due to its between-ness). Living here, Swamiji organised an oblation (yajna) every year on the occasion of Gopashtami. Thousands of people attended these sacred proceedings and got the 'yajna-shesh-prasad' (Leavings of food offered to the idol of yajna)

तदीयेऽस्मिन्यज्ञे सकृदथ सुसप्ताहविधिना,
मया प्रोक्तं श्रीमच्छुकमुखगलद्भागवतकम् ।
इह प्रत्यध्यायं विलिखितकथा पद्यरचना–
स्पदं नीता काादम्बरिककृतिमध्ये विलसति ।।

स्वामी जी द्वारा आयोजित उस यज्ञ में एक बार मुझे भी सप्ताह परायण की विधि से श्री शुकमुखोद्गत श्रीमद्भागवत की कथा कहने का अवसर मिला था, जिस समय मैंने श्रीमद्भागवत कथासार नाम से एक अध्याय की कथा एक स्रग्धरा छन्द में लिखने के क्रम से ३४५ स्रग्धराओं के एक ग्रन्थ की रचना की थी, जो श्रीमद्भागवत कथासार मेरी संस्कृत पद्यात्मक बारह रचनाओं के संग्रह गीतिकादम्बरी में द्वितीय ग्रन्थ के रूप में दिल्ली विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित है ।

I chanced to preach Shrimad Bhagwatā by Saptah-vidhi (weekly method) on this occasion. For this I summarised the story of Bhagwata writing one Verse (Shloka) for each chapter (Adhyaya). This has been printed as the 'second book' of Giti Kadambari written by me and published by Shri Lal Bahadur Shastri Kendriya Sanskrit Vidhyapeetha.

महात्मासौ तं मे नवलमपि यत्नं स्तुतिपदैः
समेध्याकार्षीद्यत्फलितमिति मन्ये मयि कृपाम् ।
इह श्रीमत्सेवावसरसुखदस्मृत्यवशता—
वशाद् यद् व्यस्मार्षं तदुपश्रृणुतार्याः सहृदयाः ॥

यहाँ पर श्रीमान् स्वामी जी की सेवा के अवसर की सुखद स्मृति से विवश होकर मैं जिस बात को भूल गया था अब सहृदय आर्यगण उस प्रसंग को सुनें। जिसमें इन महात्मा जी ने मेरे उस नवीन प्रयत्न को भी स्तुतिमय शब्दों से बढ़ावा देकर सफल किया था, उसे मैं अपने ऊपर उनकी परम कृपा मानता हूँ।

The applause of Swamiji made my efforts of writing this 'Shrimad Bhagwata Kathāsār' thriving. I consider this as his greatest favour to me. Remembering this salubrious chance of his service, I was so drowned in it that I forgot to go on with the meritorious story that I started "Friends ! Here I start it once again, Listen to it carefully."

अथो मूलस्थानं तदनु गुजरातं च गुजरा-
नवाल्यां टोबाटेकहरिनगरं चापि समगात्।
स तांदल्यावालां समुपगतवान् गोजरमपि,
प्रवीणः सत्सङ्गार्थकभवननिर्माणविधौ ॥

पूज्य स्वामी जी झंग मध्याना से मुलतान, गुजरात, गुजरां-वाला और टोभाटेकसिंह में पधारे. ताँदल्याँ वाला और गोजरा में भी उन्होंने पदार्पण किया, सर्वत्र उनके प्रयत्नों से प्रकट हुआ कि स्वामी जी सत्संग-भवन आदि बनवाने में बहुत ही प्रवीण या सिद्धहस्त हैं।

After this, this skilful founder of religious institutes went to Mandis (Markets) of Multan, Gujrat, Gujranwala, Tobha Tek Singh, Tāndalyān wala and Gojra and established many temples there.

अथ श्रीगान्ध्यादिप्रथितमहतां सत्प्रयत्नैः,
स्वतन्त्रोऽभूद्देशः परमिदमभूद् दुर्विभजनम् ।
निरुद्धा हा म्लेच्छैः कुरुभिरिव गावो व महिला-
स्तथा कन्याः कष्टादवितुमुदगात्पार्थवदयम् ।।

इसके बाद महात्मा गांधी आदि प्रसिद्ध महानुभावों के प्रयत्नों से देश स्वतन्त्र हुआ किन्तु उसी समय दुर्भाग्य से देशविभाजन हो गया। तब जैसे कौरवों ने विराट की गौओं को रोक लिया था ऐसे ही म्लेच्छों ने अनेक हिन्दू महिलाओं और कन्याओं को रोक लिया था, जिन्हें अर्जुन के समान युक्तिविशारद स्वामी जी ने उनके बन्धन से मुक्त करवाया।

At last India got independence due to theconstant efforts of Mahatma Gandhi and others, but alas! the Nation was divided into two parts. At the time of partition Muslims captured many Hindu women and girls but Swamiji came to their rescue, following the character of Arjuna, who rescued the cows of Virāt from the custody of Kauravas.

स्वतन्त्रेऽस्मिन् देशे विविधविषमक्लेशविवशो,
जनो धर्मं हित्वा विचरति पुरा भिन्नसरणिः ।
इति ध्यात्वा लोकान् पुनरपि स धर्मे नियमयन्,
समन्तादभ्राम्यत् सततमखिलप्रान्तपथिकः ॥

इस स्वतन्त्र देश में अनेक प्रकार के कठिन क्लेशों से विवश हुए लोग मर्यादाएँ छोड़कर और धर्म को छोड़कर यथेच्छ विचरण करने लगेंगे ऐसा विचार करके स्वामी जी ने लोगों को फिर से धर्म में बाँधते हुए समस्त प्रदेशों का पथिक बनकर सर्वत्र भ्रमण किया ।

"Though the Nation has become free but still it is helpless due to many inaccessible problems. People will have their own way and will not follow the path of religion and ambit of life," Thoughts of this type came to his mind repeatedly and once again he set out to inspire the people of all the provinces to follow the true path of religion.

अथोद्वासक्लिष्टान् पुनरपि निवासानगमयद्,
वसन्तं चैकैकं कुशलमपि पृष्ट्वात्यसुखयत् ।
पुनस्तान् धर्मार्थं दृढपरिकरानप्यरचयत्,
परिभ्राम्यन्नत्रापि स नवसभा आविरकरोत् ।

अब पंजाब से उजाड़े जाने के कारण कष्ट में पड़े लोगों को निवास दिलवाया और निवास प्राप्त करके जहाँ-तहाँ बसे हुए प्रत्येक प्रेमीजन के पास जा जाकर उनसे कुशल मंगल पूछ कर उन्हें सुखी किया। फिर उन्हें धर्म के लिए कमर कसवाकर तैयार किया, यहाँ भी भ्रमण करते हुए उन्होंने नई-नई सभाओं की स्थापना की।

He helped in rehabitation of these displaced and unhappy refugees. He pleased them by asking about their welfare. He made them the true soldiers of Dharma (religion) and once again instituted many new Sabhas.

स झाँसीघोरेण्डा — नजफगढ़ — सोनीपतमुखे,
कलानौरे पानीपतसदृशि सोनादितुलिते ।
गुरुग्रामे वा रोहतकनगरे बहादुरगढे,
सभाः शाला भव्या अकृत हरियाणाजनपदे ॥

वर्तमान हरियाणा प्रदेश में हाँसी, घोरेण्डा, नजफगढ़, सोनीपत आदि में कलानौर, पानीपत जैसे नगरों में और सोना आदि जैसे ग्रामों में गुड़गांव और रोहतक तथा बहादुरगढ़ में स्वामी जी ने अनेक सुन्दर सभाएँ और शालाएँ स्थापित कीं ।

He founded many educational and religious organisations in Hansi, Ghorenda, Najafgarh, Sonepat, Panipat, Kalanaur, Sona, Gurgaon, Rohtak, Bahadurgarh and other towns of Hariyana.

क्वचिच्छ्रीदुर्गाया भवनममुना स्थापितमभूत्,
क्वचिच्छ्रीगीतायाः सदनमभवत्तेन रचितम् ।
क्वचित्सत्सङ्गार्थं कलितमिह हर्म्यं सुविपुलं,
क्वचिद्देवागारं गुरुतरमनेनात्र विहितम् ॥

कहीं श्री दुर्गाभवन स्थापित किया और कहीं गीताभवन । कहीं सत्संग के लिए विमल विशाल प्रासाद (महल) बनवाया और कहीं बहुत बड़े मन्दिर का निर्माण करवाया ।

He went on with his sacred job of making excellent and magnificent buildings of Durga Bhavans, Gita Bhavans, Satsang Bhavans (Community-Centres) and temples here and there.

अथो खालसास्थानं किल गुरुमुखीञ्चाप्यभिमुखीं,
विधायाकार्षुस्ते कलहमपरं शिष्यनिवहाः ।
अखण्डत्वं देशे स्थिरयितुमसौ तत्र जनतां,
तथा राज्ये नेतॄनदिशदुचितां नीतिसरणिम् ॥

इन दिनों सिक्खों ने खाल्सा स्थान और गुरुमुखी भाषा को आगे करके एक नया झगड़ा प्रारम्भ किया । तव देश की अखंडता को स्थिर रखने के लिए स्वामी जी ने जनता को, सरकार को और नेताओं को उचित नीतिमार्ग का निर्देश दिया ।

When Sikhs demanded a separate state 'Khalsa-sthan' for them and wanted Gurumukhi to be the language of this state, Swamiji, the advocate of National Integrity, gave his prudent counsel to the leaders of Punjab for the rightful and diplomatic solution of this problem.

जवाहरलालश्रीरपि बुधवरेणोपदिशता,
परां प्रीतिं नीतो निजदृढतपस्त्यागविभवैः ।
सुरक्षाकोषेऽस्मै पुनरयमदाद्र प्यकमयं,
सुलक्षाणां धर्मप्रतिनिधितया पञ्चकमपि ।।

विद्वद्वरेण्य स्वामी जी ने श्री जवाहरलाल जी को भी उपदेश देते हुए अपनी दृढ़ तपस्या और त्याग के प्रभाव से परम प्रीति प्राप्त करवाई । नेहरू जी को उन्होंने सुरक्षा कोष में सनातन धर्म जगत् के प्रतिनिधि के रूप में पाँच लाख रुपये एकत्रित करके समर्पण किये ।

The eminent scholar Swamiji preached the true path of duty to Pandit Jawahar Lal Nehru. Pandit Nehru was impressed by the penance and austerity of this recluse. As a representative of Sanatan Dharma he gave five lack rupees in the National Defence Fund.

मतल्लीयं दिल्ली भवति हि पुरां भारतभुवा—
मिहापि स्थाप्या मे भवति भविका संस्कृतिरियम् ।
इति स्थाने स्थाने स्थिरयति पुरा धार्मिकसभा—
स्तथा दैव्या वाचः प्रथयति स सम्मेलनमपि ।।

'भारत की नगरियों में यह दिल्ली श्रेष्ठ है, यहाँ भी मुझे भारत की इस भव्य संस्कृति की स्थापना करनी चाहिये।' यह विचार करके स्वामी जी ने यहाँ स्थान-स्थान पर धार्मिक सभाओं को स्थिर किया, अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य सम्मेलन को भी अपने आशीर्वाद से यशस्वी बनाया।

"Delhi is the capital of Bharat and is one of the best cities. I should become the means of spreading the magnificent Indian culture here too," thinking this he established many Sanatan Dharma Sabhas in various parts of Delhi and blessed Sanskrit Sammelan because Sanskrit is the basis of Sanskriti (Culture).

यथानेनैवेदं किमपि कमलाख्याननगरे,
विशालं श्रीगीताभवनमतिशालं विरचितम् ।
तथा दिव्यं भव्यं किमपि दरियागञ्जविषये,
प्रतिष्ठां प्रापैषीन्मदनुगसभायास्तु भवनम् ।।

जैसे इन स्वामी जी महाराज ने कमला नगर में अनेक शालाओं वाला विशाल गीता भवन बनवाया है वैसे ही उन्होंने दरियागंज में भी मेरे द्वारा नौ वर्ष तक रामायण और गीता के प्रवचनों द्वारा सेवित श्री सनातन धर्मसभा का भी नवीन और महान् भवन प्रतिष्ठा को प्राप्त करवाया ।

He founded the magnificent multistorey-building of Gita-Bhawan at Kamla Nagar and executed the job of establishing a grand prosperous and beautiful temple 'Shri Ram Mandir' at Daryaganj.

समोतीराजेन्द्रे तिलकनगरे चापि विहितः,
पटेलाख्ये मालव्यविदितपुरे मन्दिरगणः ।
स कीर्तिस्तम्भात्मा भवति किल धर्मैकमनसो—
ऽस्य विद्यासिद्धिभ्यामुपगतमतेर्विक्रमजुषः ॥

मोती नगर, राजेन्द्र नगर, तिलक नगर, पटेल नगर और मालवीय नगर में स्वामी जी ने मन्दिरों की स्थापना की। ये मंदिर समूह विद्याओं और सिद्धियों से युक्त बुद्धि वाले, धर्म में एकाग्र-भाव रखने वाले, पराक्रमशील स्वामी जी के लिए कीर्ति स्तम्भ के समान है।

The temples, instituted by him at Moti Nagar, Rajendra Nagar, Tilak Nagar, Patel Nagar and Malviya Nagar, are the pillars of his glory and prove that he is a perfect, intelligent, voilent, undisturbed devotee of religion.

सभानां शालानां सुकृतभवनानां विरचने,
समन्तात्साहाय्यं विलसति यतेरस्य महतः
अगृह् णन्नेष द्राक्प्रवचनकलाकर्षितजनो,
धनं सङ्गृह्यैषां वितरति हि लक्षाद्बहुतरम् ॥

सभाओं, शालाओं तथा अन्य धर्म स्थानों की रचना करने में सभी ओर इस महात्मा का सहयोग सुशोभित हो रहा है। स्वामी जी स्वयं कुछ भी न लेते हुए अपने प्रवचन की कला से जनता को आकर्षित करके धार्मिक संस्थाओं के लिए लाखों से भी अधिक धन का संग्रह कर देते हैं।

The foundation of Sabhas, Shalas and other institutes every where, is the display of his help. He inspires people to donate lacks of rupees for the establishment of these institutes but does not keep a penny for himself.

इतीदृक्षैर्लोकोपकरणपरैरेव सुकृतै—
रयं देशस्यास्य प्रतिदिशमलङ्कर्तुमयितः ।
पदाङ्केष्वेतस्य प्रविलसति कीर्तिः सुखचिता
वितन्वन्ती किञ्चिन्मधुरमिह सौरभ्यविभवम् ।।

इसी प्रकार के लोकोपकार करने वाले पवित्र कार्यों से स्वामी जी देश की प्रत्येक दिशा को अलंकृत करने के लिए गये, वे जहाँ-जहाँ पधारे वहीं-वहीं उनके चरणचिन्हों में सुखपूर्वक संचित हुई कीर्ति स्वामी जी के मधुर और विमल यश की सुगन्धि को फैलाती हुई विराजमान है।

Thus he ornamented every direction of the nation by doing the meritorious job of benefitting the people. The glory, itself, dwells in his foot prints and spreads its sweet smell in every direction.

विभिन्ना अप्येते भरतभुवि तिष्ठन्ति बहुस—
म्प्रदाया एकस्मिन्विहितरतयोऽस्मिन्यतिवरे ।
समाजे साधूनामयमुपगतोऽध्यक्षपदवीं,
तदेवैतत्तथ्यं प्रथयतितरां तारहृदयः ।

भारत भूमि में परस्पर भेदभाव रखने वाले भी अनेक सम्प्रदाय इन एक महात्मा में प्रीति रखते हैं । उज्ज्वल हृदय स्वामी जी ने साधु समाज के अध्यक्ष पद को प्राप्त करके इसी यथार्थ वस्तु को प्रकट किया है ।

All the modes of religion (Sampradayas) have an affection for this gallant ascetic. That is why this benevolent Swami became the president of Bharat-Sadhu-Samaj.

हरिद्वारे श्रीमत्यृषिकुलपदेऽप्यस्य महती,
प्रतिष्ठा दृष्टा मे निपुणमवधूताधिवसतौ।
तथैवेमं योगाश्रममथ गुरोर्मण्डलमयं,
महात्मा सम्मानं नयति निजसौहार्दजनितम् ॥

हरिद्वार में ऋषिकुल विद्यापीठ ब्रह्मचर्याश्रम में तथा अवधूत मण्डलाश्रम में मैंने स्वामी जी महाराज की प्रतिष्ठा देखी है। इसी प्रकार ये महात्मा योगाश्रम और गुरुमण्डलाश्रम को भी अपने सौहार्द्र से सम्मान प्राप्त कराते हैं।

He is a man of excellent reputation in Haridwar. He has been honoured by the various educational and religious institutes such as Rishikul-Brahmacharyashram, Audhoot-Mandalāshram, yogāshram and Guru Mandlāshram, due to his friendly nature.

सुहृन्नश्च श्रीमान् भजति भगवद्दास इह यं,
प्रदाय द्वे लक्षे रचयति च विद्यालयमपि।
व्यवस्थार्थं तस्य स्थपयति स कञ्चिच्च निधिपां,
यदध्यक्षः स्वामी कृत इह सदस्योऽहमपि च ॥

हमारे परमहितकारी मित्र श्रीमान् लाला भगवानदास जी कत्याल ने स्वामी जी महाराज को दो लाख रुपये देकर हरिद्वार में अपने नाम से 'भगवान दास संस्कृत महाविद्यालय' की स्थापना की है। उसकी व्यवस्था के लिए उन्होंने एक ट्रस्ट की स्थापना की है, जिसके अध्यक्ष श्री स्वामी जी महाराज हैं और मैं भी शिक्षा में परामर्श देने के लिए एक मनोनीत सदस्य हूँ।

My ideal friend Lala Bhagwan Dass Katyal was a constant worshipper of Swamiji. He gave two lakhs of rupees for the installation of a Sanskrit Vidyalaya. He also made a trust for the regulation of this Vidyalaya. Swamiji was made the chairman of this trust and I was included as Educational Advisor.

महात्माऽसौ रात्रिन्दिवमपि परेषामुपकृतौ,
विलग्नः स्वं कायं हृदयमपि विस्मरति यत् ।
तदस्याभूद् व्याधिः परिचितजनाधिः सुविषमो,
विलिङ्ङ्डन्नित्याख्येऽवसदिह चिकित्सालयवरे ।।

ये महात्मा रातदिन परोपकार में तत्पर रहते हुए अपने शरीर को भी भूल जाते हैं और हृदय को भी। इस उपेक्षा से इनको भयंकर हृदयरोग हो गया था। जिसे सुनकर सभी परिचित जन मानसिक व्यथा को प्राप्त हुए थे। उस समय स्वामी जी विलिङ्गडन हस्पताल में रखे गए थे।

This great sage forgot his body and heart while serving the cause of humanity. Due to this he was attacked by a serious disease and was admitted in Willingdom Hospital-making his bhaktas (followers) and friends vexed and worried.

अगच्छावाथानामयमिममपृच्छाव समये,
तदा श्रीमत्या मे निजमनसि सङ्कल्पितमिदम् ।
तदेवाद्य व्यासार्चनशुभतिथौ कल्पितमभू—
न्मया काव्यं श्राव्यं हृदयकमलामोदजननम् ।।

हम (पति पत्नी) दोनों भी उनकी कुशल पूछने वहाँ गये थे, समय मिलने पर कुशल समाचार पूछा । तब श्रीमती ने अपने मन में यह संकल्प किया । उसी संकल्प के अनुसार आज व्यास पूर्णिमा पर मैंने हृदय कमल में आमोद उत्पन्न करने वाला अथवा मेरे हृदय और कमला को आनन्द देने वाला यह श्रव्य काव्य बना दिया है ।

Both of us too (I and my wife) went there to know about his welfare. Then and there my wife decided that I should write a hymn (stotra) of this great sage. I composed this hymn at the night of Vyas Pooja for the pleasure of Kamla (my wife) and my heart.

शताब्दीग्रन्थे यल्लिखितमिह काश्मीरविषये,
मया गद्यं तस्यानुकृतिरयते पद्यमयताम् ।
इयं लोके यायात्प्रथितिममुना साकमधिका–
मिति न्यस्ता श्रीमद्गुरुचरणदासस्य चरणे ॥

मैंने अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन की शताब्दी ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत जम्बू काश्मीर प्रान्त के शताब्दी ग्रन्थ में श्री स्वामी जी का जो चरित्र गद्य में लिखा था उसका अनुकरण इस काव्य में पद्यमय हो गया है। उसका यह अनुकरण उस ग्रंथ के साथ अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त करे। इस शुभकामना से श्रीस्वामी गुरुचरणदासजी महाराज के चरणों में अर्पण किया है।

Whatever was written in "Sanskrit Shatabdi Granth-Jammu Kashmir Volume" about him by me in prose has now been composed in Verses. This hymn is being dedicated to his sacred feet for the prosperity of this Verse along with that prose.

जनैर्यद्यन्न्यस्तं भवति चरणे तद् बहुगुणी—
भवत्तेषां पार्श्वे पुनरपि समेतीति विदितम् ।
इमेऽपि श्लोका मे यदि बहुगुणीभूय समिता-
स्तदा नूनं यत्नो मम भवति भूयः सफलितः ॥

भक्तजन जो जो वस्तु पूज्यपाद स्वामी जी के चरणों में अर्पण करते हैं वही वही वस्तु उनके पास अनेक गुणी होकर उपस्थित होती है यह बात प्रसिद्ध है । वैसे ही मेरे ये १०८ पद्य भी यदि बहुगुणा होकर मेरे पास लौट आयेंगे तो निश्चय ही मेरा प्रयत्न विशेष सफल हो जाएगा ।

It is well known that whatever people present to his sacred feet, becomes multiplied before it is given back to them. If these rhymes (Shlokas) also become manifold after being presented to him, my efforts will be fruitful.

अहो स्थाने स्थाने सुभवनविधानेऽतिनिपुणो—
ऽनिकेतो लक्षाणामुपचयकरोऽस्पृष्टविभवः ।
सहस्राणामन्नं दददपि विशिष्टं, स्वयमसा—
वसून् धर्तुं भुङ्क्ते न तु रसविशेषं स्वदयितुम् ॥

अहो ! स्थान स्थान पर विशाल भवन बनवाने में निपुण होते हुए भी स्वामी जी स्वयं अनिकेत हैं बेघरबार हैं। लाखों रुपयों का संग्रह करने वाले होते हुए भी द्रव्य को नहीं छूते। हज़ारों को स्वादिष्ट भोजन देते हुए भी स्वयं वे केवल जीवन धारण करने के लिए अन्न ग्रहण करते हैं। रस-विशेषों का आस्वाद चखने के लिये नहीं।

"O ! This wonderful Swami, who is expert in establishing buildings place to place, has no property of his own. He who has collected lacks of rupees for others, has not got a single pie for himself. He, who feeds thousands of people with sweet and tasty dishes, eats only to live and not for taste."

नरे वा नार्यां वा न खलु कलयत्येष हि भिदां,
समाना सामान्या विलसति दृगेतस्य हि तयोः ।
कथामेतामस्य स्मरति हृदयं, गायति गिरा,
लिखन्ती चेयं मे क्वचिदपि न लेखा विरमति ॥

स्वामी जी नर में या नारी में भेद नहीं देखते उनकी वात्सल्य पूर्ण दृष्टि दोनों पर सामान्य रूप में समान ही रहती है। इनकी इस कथा को मेरा हृदय नित्य स्मरण करता है, वाणी गाती है, लेखनी इस कथा को लिखती हुई कहीं भी नहीं विरमती (रुकती)।

"He does not distinguish between men and women. He treats them equally. That is why, my heart remembers, my tongue sings and my pen writes his melodious story without ever being stopped".

इमां विप्रोऽधीत्य श्रयति सुतरां ब्रह्ममयतां,
तथा राजन्योऽपि प्रणयति जगन्नेतृवरताम् ।
समृद्धिं वैश्योऽपि व्रजति खलु शूद्रो विनयितां,
गतिं तामेवान्ते श्रयति यदि नारी च पठति ।।

इस कथा को पढ़ कर ब्राह्मण ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है। क्षत्रिय जगत् में श्रेष्ठ नेता बनता है। वैश्य समृद्धि को प्राप्त करता है और शूद्र विनयवान् हो जाता है। यदि इस स्तोत्र को कोई स्त्री पढ़ती है तो वह भी परमगति को प्राप्त होती है।

"A Brahmin becames Brahma (Supreme God), A Kshatriya becomes an eminent leader, A Vaishya becomes virtuous, A shudra becomes polite and a woman gets salvation by reciting this pious paean of this great sage."